प्रेम- सीखना पड़ता है Book Summary in Hindi| आचार्य प्रशांत

देखिये इस बात में कोई दो राय नहीं की हम सभी प्रेम के भूखे हैं, कठोर शब्दों में कहूँ तो हम प्रेम के भिखारी है। इसलिए दोस्तों से, परिवार से और समाज में हर किसी व्यक्ति से हम प्यार पाने की चाहत में रहते हैं। सीखना पड़ता है -प्रेम)Book Summary in Hindi)

इसलिये फिर हम अपने कार्यों को भी उसी तरह अंजाम देते हैं फिर चाहे वह गलत ही क्यों न हों।

यही वजह है की ढाई अक्षर के **प्रेम** शब्द का सही मतलब न पता होने के कारण इंसान जीवन भर कभी मोह में तो कभी स्वार्थवश प्रेम करता है।

और अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर आप भी यह समझ चुके होंगे की जब भी इंसान किसी से मतलब से या फिर मोहवश प्रेम करता है तो अंत में उसे दुःख ही झेलना पड़ता है? तो क्या इसका मतलब है किसी से प्रेम ही न करें?

जी नहीं, बल्कि इसका मतलब है की प्रेम करने से पहले समझें आखिर यह प्रेम क्या है? इसे सीखना क्यों जरूरी है? आपको लगता होगा प्रेम तो बच्चे के पैदा होने के साथ ही उसमें आ जाता है! तो फिर इसमें सीखने जैसा क्या?

जी नहीं, यही चीज़ है जो हम जीवन भर समझ नहीं पाते। और अपने ज्ञान के इसी अभाव में इंसान का जीवन रसहीन हो जाता है।

इसलिए इस मतलबी प्रेम से परे सनातन धर्म में गुरुओं, ऋषियों की वाणी में विशुद्ध प्रेम का जो सही अर्थ है, उसे अपने जीवन में उतारने के बाद लोगों के जीवन में प्रेम बांटने के लिए आचार्य प्रशांत ने वास्तविक प्रेम पर आधारित एक पुस्तक ही लिख डाली, जिसका शीर्षक है **प्रेम सीखना पड़ता है।**

तो अगर आप भी जीवन में सच्चा आत्मिक प्रेम लाना चाहते हैं ताकि आप जीवन में अपने बन्धनों को तोड़ सके और अपने दुःख भ्रम मिटा सके। तो यह सिर्फ जीवन के प्रति प्रेम ही करवा सकता है।

इसलिए प्रेम को समझने के लिए आपको 20 अध्यायों में प्रेम का सही अर्थ बताने वाली यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए।

अध्याय 1~ प्रेम सीखना पड़ता है

अध्याय का पहला शीर्षक है प्रेम सीखना पड़ता है।

इस अध्याय की शुरुवात में प्रश्नकर्ता पूछ रहे हैं की जीवन में कुछ सही काम करने से पहले अपनी सेल्फ इमेज (आत्म छवि) को खोने का डर मन में पैदा होता है, और इस डर के होने की मुख्य वजह जीवन में प्रेम की कमी है।

जवाब में आचार्य जी कहते है की देखो हमें बिलकुल भी यह विचार नहीं रखना चाहिए की प्रेम हमें जन्मजात मिल जायेगा, बिलकुल नहीं।

वे कहते हैं इस बात से बिलकुल भ्रम में मत पड़ना की प्रेम तो जानवरों में भी होता है और हममें भी होगा, नहीं ऐसा कतई नहीं है पहली बात जानवरों में प्रेम नहीं होता, जानवरों में महज प्राकृतिक सौहार्द हो सकता है, प्रेम की सम्भावना तो सिर्फ आत्मा वाले इस जीव यानि हम मनुष्यों को ही मिली है।

और यह जरूरी बिकुल नहीं की हर इन्सान अपने भीतर इस प्रेम की सम्भावना को सच बना ले, हालाँकि जब इन्सान के जीवन में कोई कृष्ण जैसा व्यक्ति आ जाये तो प्रेम को वह जीवन में समझ सकता है, उतार सकता है या जी सकता है।

आगे आचार्य जी कहते हैं की अपनी वर्तमान समस्या को सुलझाने के 2 तरीके होते हैं।

समस्या के समाधान के 2 तरीके

पहला तो यह की आप जिस समस्या में फंसे हुए हैं, ठहर जाइए और ध्यान से समझने का प्रयास कीजिये की ये समस्या आखिर आई कहाँ से और यह किधर जा रही है।

दूसरा आप उस परेशानी को छोड़ कर किसी ऐसे के पास जाएँ जो आपकी समस्या से बहुत बड़ा हो, उसके पास जाकर थोडा वक्त गुजारिये फिर देखिये क्या पता जो समस्या तुम्हें आज बहुत बड़ी लग रही हो वो बहुत छोटी लगने लगे।

यह कुछ ऐसा ही है जैसे आप गणित के किसी प्रश्न में उलझे हुए हैं तो टीचर के पास जाकर जब आप अपनी परेशानी का समाधान प्राप्त करते हैं तो आपको ज्ञात होता है की मैं तो बस छोटी-सी चीज़ में अटका हुआ था!

आगे इस अध्याय में आचार्य जी कहते हैं की प्रश्नकर्ता की समस्या को देखते हुए मुझे लगता है इनमें से दूसरा तरीका ज्यादा आसान होगा अपनी समस्या को सुलझाने के लिए!

अंतिम शब्द

तो साथियों यह था आचार्य जी द्वारा लिखित इस पुस्तक का पहला अध्याय, आने वाले अध्यायों में हम प्रेम- सीखना पड़ता है Book Summary in Hindi में अनेक समस्याओं को सुलझाती इस पुस्तक के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे!

अध्याय -2 क्या प्रेम किसी से भी हो सकता है? प्रेम: सीखना पड़ता है Book Summary in Hindi

तो साथियों प्रेम नामक इस पुस्तक के पिछले **अध्याय 1** में हमने जाना की मनुष्य में प्रेम जन्मजात नहीं होता बल्कि उसे प्रेम सीखना पड़ता है। आज, अध्याय 2 की शुरुवात होती है जिसका शीर्षक है **क्या प्रेम किसी से भी हो सकता है?**

अध्याय 2 की शुरुवात "आचार्य जी, क्या प्रेम किसी से भी हो सकता है? इस प्रश्न से होती है?

जवाब में प्रेम को समझाने के लिए आचार्य जी हमारे भीतर मौजूद मन के 4 तलों की बात करते हैं।

मन के चार तल | हर तल पर है प्रेम का भिन्न अर्थ

कहते हैं पहला तल मनुष्य का सबसे निचले तल का मन होता है " जहाँ पर इन्सान सिर्फ अपने बारे में सोचता है, यानि की इस तल पर जीने वाला मनुष्य महज अपनी जरूरतों और इच्छाओं की पूर्ती पर ध्यान केन्द्रित करता है, वह अन्य लोगों से भी इसलिए सम्पर्क स्थापित करता है ताकि उसकी कामनाएं पूरी हो जाये"

इस तरह का मन समाज में प्रायः उन लोगो का होता है जो मानते हैं की

दुनिया जाये भाड़ में, हमें सिर्फ अपने से मतलब है।

इसलिए आचार्य जी कहते हैं कि इस तरह के लोगों को समाज कुछ ख़ास महत्व नहीं देता, या पसंद नहीं करता। लेकिन फिर भी ऐसे लोग समाज को चलाने में भूमिका निभाते हैं।

फिर आते हैं **दूसरे तल** के लोग जो प्रेम करने का एक दायरा निर्धारित कर लेते हैं, उस दायरे में उनके पारिवारिक सदस्य या अन्य कुछ चुनिन्दा लोग होते हैं, इस सीमा के बाहर जो भी लोग होते है उन्हें उनसे कोई प्रेम नहीं होता।

एक आम गृहस्थ व्यक्ति इसी तल पर जीवन जीता है जो कहता है की अपने परिवार के सुख के लिए अगर मुझे दुनिया से बेईमानी करनी पड़े या किसी का शोषण करना पड़े तो मैं उसके लिए भी तैयार रहूँगा।

इस तल पर जीने वाले व्यक्ति को समाज बड़ा पसंद करता है, क्योंकि ऐसे जीवन में पहले से सबकुछ तयशुदा रहता है और समाज के बने बनाये ढर्रे पर लोग जीवन जीते हैं!

फिर आता है तीसरे तल का मन जिसमें कवि, शायर, लेखक, मीडिया इत्यादि आते हैं, जो अपने शब्दों से या बोल से समाज की वास्तविक स्तिथि बयां करने का काम करते हैं!

अब चूंकि पहला तल यानी स्वकेंद्रित मन और दूसरा गृहस्थ व्यक्ति को अपने जीवन से फुर्सत नहीं तो फिर फ़िल्में बनाना, कवितायेँ लिखना या फिर किसी घटना का उल्लेख करना ये सब काम करके तीसरे तल के लोग, लोगों का ध्यान किसी मुद्दे पर आकर्षित करते हैं!

इनसे समाज में कुछ लोग या वर्ग खफा तो रहते हैं लेकिन चूँकि ये लोग किसी सिस्टम के खिलाफ किसी तरह का स्पष्ट विद्रोह नहीं करते, इसलिए समाज में लोग इन्हें स्थान दे देते हैं!

ऋषि के मन में होता है अथाह प्रेम – मन का चौथा तल

फिर आता है **चौथा तल** जो की एक ऋषि का मन होता है, इस तल पर मन आकर अ-मन हो जाता है, क्योंकि यहाँ पर मन यानि मैं खत्म हो जाता है और सिर्फ प्रेम बचता है!

एक कवि जहाँ परिवार से आगे जाकर समाज में कई लोगों तक पहुँच जाता है, वहीँ ऋषि को अब व्यक्ति और उनकी संख्याएं दिखाई नहीं देती।

क्योंकि अब उनके प्रेम का कोई विषय नहीं है, ऋषि के मन में कर्ता भाव समाप्त हो जाता है क्योंकी जब कोई कहेगा मैं किसी से प्रेम करता हूँ इसका मतलब है मैं यानि अहंकार इस बात को बोल रहा है।

तो अहंकार खत्म होने की वजह से ऋषि के मन में कोई हिंसा नहीं होती वहां सिर्फ प्रेम होता है, और वो भी किसी एक व्यक्ति विशेष या समुदाय के लिए नहीं बल्कि यह हर जगह होता है!

इसलिए इस तल पर जीने वाला व्यक्ति आत्मस्थ होता है और अब यह कहीं भी जाता है तो किसी स्वार्थ या कामना से नहीं जाता! इसलिए जहाँ जहाँ इसके कदम पड़ते हैं वहां भी प्रेम के छीटे पड़ते हैं।

प्रेम के नाम पर समाज में हो रहे हैं कुकर्म

आगे आचार्य जी इस अध्याय में कहते हैं प्रेम वो बिलकुल नहीं जो प्रायः हमें टीवी, समाज और फिल्मों में बताया जाता है यह दूसरे तल का मन है!

आजकल 8-9 साल की बच्चियां प्रेम के गानों में नांच रही है, झूम रही है, माँ बाप देखकर गदगद हो रहे है। लेकिन इस फूहड़पन को प्रेम का नाम दिया जा रहा है, निब्बा- निब्बी जिनकी दाढ़ी-मूंछ नहीं आई है वो आशिक बनकर घूम रहे हैं!

इसलिए तो ऋषियों ने जब देखा की समाज में उस समय भी प्रेम शब्द के नाम पर क्या क्या घटिया काण्ड हो रहे हैं तो ऋषियों ने इस शब्द का नाम बदलकर परा प्रेम अर्थात **परमप्रेम** कर दिया!

लेकिन आचार्य जी कहते हैं की ऋषियों को विद्रोह करना था उनको प्रेम शब्द का नाम बदलना नहीं चाहिए था, बदलना तो उनको चाहिए था जिन्होंने प्रेम शब्द का अपमान किया।

अध्याय में कहा गया है कि प्रेम तो बहुत ऊँची चीज है, जो इंसान के दुःखों, बन्धनों को काटता है और उसे खुले आसमान में उड़ना सिखाता है, वो हमें छोटा शुद्र जीवन जीने से रोकता है और हमें सही जीवन जीने की प्रेरणा देता है!

अंतिम शब्द

तो साथियों यह थी अध्याय 2 की बुक समरी, अगर आपको इस बुक को विस्तार से पढना है और प्रेम का सही अर्थ समझना है तो आप इस बुक को Amazon से घर मंगवा सकते हैं!

अध्याय 3 ~ कौन है प्रेम के काबिल ? Prem Books Summary in Hindi

अध्याय 3 का शीर्षक है कौन है प्रेम के काबिल? जिसके आरम्भ में प्रश्नकर्ता पूछ रहे हैं की आचार्य जी इस संसार में दूसरों से प्रेम करना इतना मुश्किल है, जबकि टीवी, फिल्मों में हम देखते हैं की **लव इज गॉड**, लेकिन फिर भी ऐसा क्यों है की एक व्यक्ति दूसरे से प्रेम नहीं कर पाता!

जवाब में आचार्य जी कहते हैं " **प्रेम करने वाला कौन है**"

प्रश्नकर्ता: हम

आचार्य जी: हम माने कौन

प्रश्नकर्ता: स्वयं मेरे लिए बहुत मुश्किल है किसी व्यक्ति से प्रेम करना।

आचार्य जी: आप हैं कौन उसी से ये निर्धारित होता है की आपका प्रेम क्या होगा दूसरों के लिए?

आगे आचार्य जी प्रश्नकर्ता से सवाल जवाब करते हैं और इस रोचक बातचीत में अर्थ निकलता है की हम एक दु:खी इंसान यानी अतृप्त चेतना हैं जो लगातार शांति की खोज में है!

चैप्टर -3 कौन है प्रेम के काबिल? Full summary

आचार्य जी आगे कहते हैं इसलिए जब एक अशांत व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से जुड़ता है तो वह आपस में इसलिए सम्बन्ध स्थापित करता है ताकि उसे उससे शांति मिल सके!

इस अध्याय का विडियो देखें| Chapter 3 Video Summary in Hindi

देखिये, आप परेशान हैं आपके जीवन में दु:ख, भ्रम और कई तरह के बंधन हैं तो जब आप किसी के सम्पर्क में आते हैं तो क्या इसलिए आते हैं ताकि आपके जीवन में सच्चाई आये, आपके कष्ट कम हो, बंधन कटे और जीवन में शान्ति आये!

आप देखिये आजकल क्या हो रहा है, प्रेम के नाम पर हाथ पकड़कर लोग क्या कर रहे हैं?

लेकिन चाहे कुछ भी हो एक बात तय है की शान्ति की तलाश में हर कोई है, तो ये बात समझनी होगी की प्रेम सिर्फ इंसान तब कर सकता है जब वह दूसरों के बन्धनों को काटने में उसकी मदद करे, ताकि उसका जीवन उसे दु:खो से आजाद करे।

बाकी इसके अलावा कोई अगर प्रेम के नाम पर किसी से संपर्क बनाता है, या जुड़ता है तो समझ लेना किसी चीज़ को पाने के लालच से, सुरक्षा से, कामवासना की पूर्ती से, सामाजिक दबाव इत्यादि कोई भी कारण से वह उससे जुड़ा हो सकता है।

लेकिन इस वजह से की गई संगती प्रेम बिलकुल नहीं हो सकती।

प्रेम को पाना इतना कठिन क्यों?

आगे इस अध्याय में आचार्य जी कह रहे हैं कि आपने कहा प्रेम पाना इतना मुश्किल क्यों है?

बात सीधी है हम वो इंसान हैं जिसकी आखिरी चाह किसी और को पाने की है, लेकिन वो ढूंढता किसी और को है, उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति रेगिस्तान में है और वह प्यास से व्याकुल है लेकिन वो पानी की उपेक्षा करके आगे पिज्जा की तरफ बढ़ रहा है!

तो क्या ऐसा करके इंसान शांत हो सकता है, नहीं न हम ऐसे ही हैं।

हमें चाहिए असल में कुछ और, पर हम उसे नजरंदाज करके 100 फ़ालतू की चीजों को जीवन में पाने की कोशिश करते है ताकि…. शांति मिल सके!

आगे इस विषय पर आचार्य जी विस्तार से आसान उदाहरणों के जरिये बात पूरी करते हैं ताकि ये स्पस्ट हो जाये की हम अशांत क्यों रहते है? और शान्ति के आसान रास्ते पर बढ़ने की बजाय उससे दूर क्यों हो जाते हैं?

जब दुनिया में हर कोई दुखी है? तो फिर इस सच्चाई को जग जाहिर क्यों नहीं करता?

प्रश्नकर्ता के इस प्रश्न पर की आचार्य जी जब आग अन्दर मौजूद है तो फिर ये मन बाहर छोटी-छोटी चीजों में शान्ति क्यों ढूंढता है? आचार्य जी कह रहे हैं देखिये हमारी इन्द्रियां नाक, कान, और मस्तिस्क सभी बाहरी जानकारियां अवशोषित करती है!

कान ध्वनियाँ सुन रहे हैं बाहर से, नाक ऑक्सीजन ले रही है बाहर से और इसी तरह से जो हमारा दिमाग है वो लगातार बाहरी द्रश्यों और लोगों के आधार पर विचारों को निर्मित करता है!

और इन सब बातों का सीधा सम्बन्ध आपको ये बात न पता चलने देना है कि और लोग भी दुःखी हैं, ये संगती का असर है की जब आप 50 दुःखी लोगों के बीच रहें और उनमें से सभी आपसे कहें की जिन्दगी बढ़िया है, सब मस्त है तो जाहिर सी बात है आप 51वें ऐसे व्यक्ति होंगे जो कहेंगे हाँ भाई सब बढ़िया है…

लेकिन इसका अर्थ कतई नहीं की मन का दुःख छुप जायेगा या चला जायेगा!

बाहर से कितना हैप्पी, हैप्पी दिखाओ लेकिन अन्दर जो बैठा है वो लगातर रो रहा है। जीवन में आपको लगता है सब कुछ तो है मेरे पास लेकिन भीतर वो जो है वो शांत नहीं होता है!

और अन्दर मौजूद वही चेतना इस दुःख को निकालना चाहती है, और आत्मस्थ होना चाहती है क्योंकि आत्मा ही सचिदानंद स्वरूप है, आनन्दित रहना उसका स्वभाव है। वो ही परम है सत्य है लेकिन झूट बोलकर आप उस आंतरिक बेचैनी को ओर बढ़ा देते है!

जी घबराया हुआ है, बेचैन है लेकिन उन 50 लोगों के बीच रहकर तुमने अपनी ऐसी दुर्गति कर ली है की अब सच को मानने के लिए राजी नहीं हो..

तो उपाय यही है की उस संगती से बाहर आ जाओ जो तुम्हें तुम्हारे सड़े हाल में ही सड़ने को यूँ ही मजबूर करे, संगती करो ऐसों की जो तुम्हारे दुःख, बन्धनों को काट सके और तुम्हें तुम्हारा आत्मिक आनंद दे सके! क्योंकि केवल वही है जो आपका अपना है जिसे कोई छीन नहीं सकता!

आचार्य जी क्या बेशर्त प्रेम होता है?

आचार्य जी कहते हैं अभी हमारे लिये नहीं, यहाँ इस हॉल में मेरे सामने उपस्तिथ हो बिना किसी इरादे के बैठे हो, है ना लक्ष्य की जीवन में सच्चाई, शांति और बोध पाना है।

“इसी तरह जब तक मुक्त नहीं हो जाते अपने बन्धनों, दुःखों से तब तक इसी कंडिशन (शर्त) पर प्रेम करो कि किसी व्यक्ति, समूह के निकट आने पर मुझे जीवन में रोशनी, शांति और मुक्ति नहीं मिल रही है? अगर नहीं, तो उठ के वहां से निकल लो”

आगे इसी वार्ता में प्रश्नकर्ता ये पूछते हैं की अगर मै किसी की अशांति को दूर करने के लिए उससे प्रेम करूँ तो यह तो बेशर्त प्रेम होगा न ?

जवाब में आचार्य जी कहते हैं कर पा रहे हो आप ऐसा?

प्रश्नकर्ता: अभी इतनी सामर्थ्य नहीं,

आचार्य जी: तो आप दूसरे का दर्द कैसे ठीक कर सकते हो, जब तुम खुद मुक्त नहीं हो!

इस तरह यह वार्ता चलती है और अध्याय 3 कौन है प्रेम के काबिल? को आचार्य जी बड़े विस्तार से समझाते है? अगर आप डिटेल में इस अध्याय का अध्ययन करना चाहते हैं तो आप यह पुस्तक Amazon से खरीद कर ऑर्डर कर सकते हैं।

Chapter 4 सच्चे प्रेम की पहचान | Full Summary in Hindi

पिछले अध्याय में हमने जाना की कौन प्रेम के काबिल होता है? आज हम **प्रेम सीखना पड़ता है** नामक इस पुस्तक के चौथे शीर्षक “सच्चे प्रेम की पहचान” का अध्ययन करते हैं।

अध्याय की शुरुवात में प्रश्नकर्ता पूछ रहे हैं ” आचार्य जी प्रेम दूसरे से चिपकने का नाम नहीं है, लेकिन अतीत में मुझे इसी तरह का प्रेम हुआ अब मैं आगे कैसे परखूँ की प्रेम सच्चा है या नहीं”

आचार्य प्रशांत: देखिये, प्रेम सच्चा है या नहीं इसे परखना बेहद सरल है। यह बात तो तय है की जीवन में सम्बन्ध तो बनेंगे ही, क्योंकि हर पल हर समय आप किसी न किसी से तो रिश्ते बनायेंगे, बस आप जिसके निकट हैं देखिये वो आपको दे क्या रहा है?

अगर बस वो तुम्हें अपने हाल में रखना चाहता है यानि तुम जैसे हो अच्छे हो, मै जैसा हूँ अच्छा हूँ तो समझ लीजियेगा वो आपसे किसी इच्छा पूर्ती की वजह से जुड़ रहा है।

यह इच्छा किसी भी तरह की हो सकती है, जैसे उसे आपसे किसी तरह का सुख मिल जाये, चाहे शारीरक-सुख हो, आर्थिक-सुख हो या फिर सुरक्षा। पर ये समझ लेना ये सच्चा प्रेम नहीं हो सकता।

अध्याय 4~ सच्चे प्रेम की पहचान

किसी से अपनी इच्छा मनवाने के लिए उसके निकट आना, दूसरे को भोगना या फिर शोषण करना कहलायेगा, और दुःख की बात है की समाज में आपको अधिकतर ऐसे ही आशिक/ प्रेमी देखने को मिलेंगे।

जो अपनी इच्छाओं को पाने के खातिर दूसरे व्यक्ति को चने के झाड में बैठा देते हैं, तुम ही मेरा रब हो, ये सब जो गाने, कहानियां प्रेम के नाम पर रचाई जाती हैं बिलकुल इसलिए ताकि दूसरे को इस बात की भनक ही न लगे की तुममें सुधार की, बेहतर होने की सम्भावना है।

अगर ऐसा पता चला गया तो प्रेमी नाराज हो जायेगा, और नाराज हो गया तो समझ लो जो सुख आप उससे लेना चाहते हैं वो आपको नहीं मिल पायेगा।

सच्चा प्रेम क्या है?

आचार्य जी समझाते हैं **सच्चा प्रेम कोई विरला** ही कर सकता है क्योंकि सच्चे प्रेम का अर्थ दुसरे की भलाई होता है, इसलिए दूसरे की भलाई और बेहतरी की खातिर तुम्हें कई बार गुस्सा, आलोचनाएँ भी सहन करनी पड़ती है।

झूठे प्रेम की तो वजह होती है,जिसमें कुछ कामना छिपी होती है, लेकिन सच्चा प्रेम निःस्वार्थ होता है! ऐसे प्रेम में व्यक्ति सिर्फ दूसरे के जीवन में बेहतरी के उद्देश्य से आता है।

इसलिए ऐसे व्यक्ति से कोई पूछे आप किसी से प्रेम क्यों कर रहे हो?

जवाब होगा "भलाई के लिए"

हालाँकि ऐसे में कुछ लोग कहेंगे दूसरे की भलाई में आपको क्या मिलेगा?

जवाब होगा " सामने वाले व्यक्ति को उसके दुःखों, भ्रम से आजादी मिलेगी" और वो आजादी देखने में बड़ा आनन्द आता है,

और आजादी तेरी मेरी नहीं होती, वो हर जीव की चाहत होती है इसलिए वो बड़ी प्यारी होती है।

और हम तुम्हारे सम्पर्क में आ रहे हैं इसलिए नहीं की तुम बहुत सुन्दर हो, चतुर हो, बलवान हो नहीं.. वो सब नही… हम तुम्हारे करीब आये हैं इसलिए क्योंकि तुम अभी वो नहीं हो जो हो सकते हो।

तुम वो फूल हो जो निखर सकते हो.. आसमान में उड़ सकते हो लेकिन अभी जी नहीं रहे जिन्दगी बस ढो रहे हो! हमारा प्रेम है तुमसे इसलिए तुम्हारे निकट आये हैं ताकि उस जिन्दगी से निकलकर तुम एक बेहतर जिन्दगी जी सको।

जो कहते हैं सच्चा प्रेम नहीं मिलता?

आपने अक्सर सुना होगा शायरों को, दोस्तों को यह कहते की कमबख्त जिन्दगी में हमें किसी से सच्चा प्यार नहीं मिला,

आचार्य जी कहते हैं " मै कहता हूँ सच्चा प्यार पाने की तुममें हैसियत ही नहीं होती"

तुम्हें तो ऐसा प्रेमी चाहिए न जो खुद को बदले और न तुम्हें बदलने दें, जैसे हो एक दुसरे से सुख भोगते रहो…

कोई आ जाये जिन्दगी में तुम्हारे और वो तुम्हारी चेतना को ऊँचा उठाने का काम करे, तुम तुरंत उससे लड़ने चले जाओगे।

कहोगे तुम क्या मेरा भला करोगे? मै जैसा हूँ I am the best और ऐसा करने से भीतर बैठा अहंकार बड़ा खुश होता है।

बस.. इसलिए कह रहा हूँ सच्चा प्रेम मिल सकता हैं! लेकिन तुम्हें उस प्रेम को झेलने की शक्ति है क्या…?

आचार्य जी आगे कहते हैं की आपके घनिष्ट मित्र, पारिवारिक सदस्य जो आज तुम्हें तुम्हारी वर्तमान हालत जो बहुत बुरी ही क्यों न हो, उसमें भी तुम्हें बहुत अच्छा बताते हैं! इसलिए नहीं क्योंकि उन्हें तुमसे प्रेम है नहीं.. अधिकतर मामलों में स्वार्थ जुड़ा होता है।

तुम घर में नोटों की गड्डी से कार, घर जैसे भोग विलास के साधन ले आओ, दोस्तों पर जमकर पैसा उडाओ हर कोई तुम्हारे सपोर्ट में रहेगा।

लेकिन वहीँ अगर तुम अपनी बेहतरी के लिए कुछ करना शुरू कर दो तो फिर देखना तुम्हारे साथ कितने लोग खड़े होते हैं।

इसलिए सच्चा प्रेमी वही है जो “आपकी आंतरिक यानी असली तरक्की में आपका साथ दें” बाकी कोई और नहीं करता आपसे सच्चा प्रेम

तो साथियों इस तरह सच्चे प्रेम पर आचार्य जी बड़ी लम्बी बातचीत करते हैं, जिसमें आचार्य जी आजकल के लोंडे जो सच्चे प्यार के नाम पर फूहड़पन दिखा रहे हैं, उन पर भी कटाक्ष करते हैं।

साथ ही हमारे समाज में प्रेम के नाम पर जो हरकतें लोगों द्वारा की जाती हैं, और साइंस में जिसे प्रेम कहा जाता है, उसे बड़े मजेदार अंदाज में बताते हैं ताकि हमें सच्चे प्रेम का वास्तविक अर्थ पता चल सके।

चिंता करते रहने को प्रेम नहीं कहते! Chapter 5 | Full Book Summary in Hindi

आज हम प्रेम सीखना पड़ता है नामक इस पुस्तक के अध्याय 5 का सारांश पढेंगे, जिसका शीर्षक है दूसरे की चिंता करते रहने को **प्रेम नहीं कहते**!

इस पुस्तक का यह अध्याय मेरे सबसे प्रिय और परिचित अध्यायों में से एक है, क्योंकि अक्सर मैं अपने परिवार में, आस-पड़ोस में इस तरह की घटनाओं को देखता हूँ, जिससे साबित होता है की आचार्य जी की बात पूरी तरह सत्य है।

अध्याय में आचार्य जी हमें बड़े रोचक ढंग से बेहतरीन उदाहरणों के जरिये समझाना चाह रहे हैं की दूसरों के बारे में व्यर्थ की टेंशन करके हम खुद ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं, आइये विस्तार से इस लेख का अध्याय करते हैं।

अध्याय की शुरुवात में प्रश्नकर्ता पूछते हैं ” आचार्य जी मैं दिन भर अपने पति और बच्चों का अनिष्ट न हो जाये, कहीं कुछ दुर्घटना न हो जाये इन ख्यालों से परेशान होती रहती हूँ, कृपया उचित समाधान बताएं”

बेवजह परेशान होने की हमारी आदत

आचार्य जी उदाहरण के साथ अपनी बात आरम्भ करते हैं।

आपने सुना होगा यूरोप में एक फुटबॉल मैच में दो टीमों के समर्थकों के बीच हुए दंगों में 5-10 लोग मारे गए, या भारत – पाकिस्तान मैच हुआ, और कई लोगों ने घर के टीवी फोड़ दिए, इस तरह की घटनाएँ अक्सर सुनने को मिलती है।

लेकिन गौर करने पर आप पाएंगे ये हरकतें खिलाडी नहीं बल्कि जिन्हें खेलने से कोई मतलब नहीं, यानि दर्शकों द्वारा की जाती है।

ये वही लोग होते हैं जिनकी खुद 200 किलो की तोंद निकली होती है, लेकिन अगर मैदान में उनकी पसंदीदा टीम हार जाए तो ये बवाल मचा देंगे।

खिलाडी कभी आपस में मारपीट नहीं करेंगे, उन्हें मैदान में खेल से मतलब है पर ये लोग अपनी टीम के लिए एक दुसरे को मारने पर उतारू हो जायेंगे।

प्रेम के नाम पर आप करें चिंता और वो करें मौज | Prem:Sikhna Padta hai Book Summary in Hindi

इसके बाद आचार्य जी प्रश्नकर्ता के प्रश्न पर आते हैं और कहते हैं “आपके पास कोई काम करने को है या नहीं, या आप दिन भर बस कभी बेटे की, कभी पति की चिंता ही करती रहती हैं, आपके पास इतनी व्यर्थ की चिंताएं करने का समय बच कैसे जाता है? “

आचार्य जी कहते हैं रात के बार बज चुके हैं, लेकिन बेटी घर नहीं पहुंची है! वहां माँ का रो-रोकर बुरा हाल हो चुका है, जितने देवी देवता थे, सब जप लिए कह रही हैं “प्रभु बस आज बचा दो उसे, कहीं अनर्थ न हो गया हो”

और बेटी यहाँ पब में व्यस्त है दोस्तों के साथ पार्टी करने में, और जब किसी तरह सभी देवी देवताओं की शक्ति से सुबह 4 बजे पब बंद होता है, तो बिटिया बहके-बहके कदमों से घर पहुँचती है तब तक माँ आंसुओं से 1 बाल्टी भर चुकी हैं"

तो ये हाल होते हैं, प्रायः हमारी चिंता के, बेटा वहां खेल रहा है मस्त, दोस्तों के साथ सुबह से शाम तक और यहाँ मां परशान है और कह रही हैं आज तो मर ही गया होगा, अब तक नहीं आया।

स्वयं को सही कार्य में व्यस्त रखना ही प्रेम है| दूसरे की चिंता करते रहने को प्रेम नहीं कहते

आगे आचार्य जी कहते हैं जहाँ तक मैं आपके प्रश्न को समझ रहा हूँ पति घर चलाने के लिए आपके कोई काम धंधा करते होंगे, कभी उनसे पूछिए जितनी चिंता आप उनकी करती हैं क्या वे भी आपकी करते हैं?

अरे इतना टाइम है किसके पास भाई, वो चिंता करें आपकी या फिर काम करें दफ्तर का, अगर किसी दिन वो चिंता करने के लिए महीना 2 महीने घर ही बैठ जाये और वो कहे

सुनो जी, मुझे तुम्हारी बड़ी फ़िक्र हो रही है तो फिर जवाब होगा आपका "की तुम इस लायक नहीं की हम तुम्हारी चिंता करें"

सुनो, वो अगर काम करना बंद कर दें तो घर में रोटी पानी कैसे चलेगी...!! इसलिए बेहतर यही है की अपने जीवन को आप किसी सार्थक काम में लगाओ, इतना टाइम जो आपको फ्री मिलता है इसमें क्यों आप कोई उचित काम नहीं करती?

जब काम में व्यस्त होंगी आप तो चिंता का भी समय नहीं होगा।

बेवजह याद करना, गिराता है दूसरों की नजरों से

और ये ध्यान रखना! कल्पना कीजिये आप किसी जरुरी काम में व्यस्त हो और आपको बार बार कोई फोन करके कहे, मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है!

इतना सुनने पर तो उसका भी मन कहेगा यह कहने को की मर गए हैं हम... और दोबारा फ़ोन मत करना हमें।

तो जो लोग जीवन में व्यस्तता जानते हैं वो बखूभी जानते हैं की कितनी चिढ़ होती है जब कोई बार बार फोन करके टोके और फ़ालतू के प्रश्न करे!

इसलिए आपकी, आपके **बेटे और पति की भलाई** इसी में हैं की आप स्वयं को किसी सुन्दर कार्य में व्यस्त रखें!

प्रेम की भीख नहीं मांगते, न प्रेम दया में देते हैं Chapter 6 | Book Summary in Hindi

अधिकतर लोगों के बीच जब बात होती है प्रेम की, तो इससे हमारा आशय सुख और दुःख बांटने से होता है, अर्थात जब हम किसी को सुख दें, या किसी से हमें सुख मिले तो हम उसे प्रेम कहते हैं लेकिन वास्तव में प्रेम कुछ और है!प्रेम की भीख नहीं मांगते और न प्रेम दया में देते हैं !

और आचार्य जी इस अध्याय में हमें समझा रहे हैं की प्रायः समाज में आप जिसे प्यार कहते हैं वो प्यार बिलकुल नहीं होता, आइये इस अध्याय की शुरवात करते हैं और समझते हैं प्रेम को।

प्रश्नकर्ता अध्याय की शुरुवात में कह रहे हैं की "आचार्य जी मैं लोगों से प्यार पाने का बड़ा इच्छुक रहता हूँ, इसलिए मैं उनसे उसी तरह का व्यवहार करता हूँ जिससे वो मेरे साथ भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करे, हालाँकि मुझे पता नहीं है की **सच्चाई क्या है**"

जवाब में आचार्य जी पूछ रहे हैं

आपको कैसे पता की लोग आपसे प्रेम करते है?

प्रश्नकर्ता कहते हैं **" ये बस मेरी सोच है, मुझे लगता है"**

तो आचार्य जी कहते हैं की " सोच में ही प्यार कर लिया करो न, ख्याल करते रहिये की मैं कुछ विशेष तरह का आचरण करूँगा और उससे कोई आकर गले मिल गया, और तुम्हें बाँहों में भर लिया, इत्यादि.. लेकिन इस तरह तुम कभी भी यह जान नहीं पाओगे की कौन तुम्हें प्रेम करता है वास्तव में"

क्योंकि प्रेम किसी तरह का आचरण नहीं होता, तुमने अभी तक कुछ खास तरह के व्यवहारों की सूची बनाई हुई है की मै इस तरह का व्यवहार फलाने व्यक्ति के साथ करूंगा तो वो खुश हो जायेगा" और किसी के साथ इस तरह का करूंगा तो वो मुझसे प्रसन्न हो जायेगा"

लेकिन आचार्य जी कहते हैं "प्रेम और ख़ुशी में अंतर होता है, प्रेम न तो किसी को सुख देने का नाम है, न ही दुःख"

हम सुख दुःख के आदान प्रदान को प्रेम कहते हैं?

हमारे अधिकांश रिश्ते सुख और दुःख के ही कारण होते हैं, हम किसी से सम्पर्क में आते इसीलिए हैं क्योंकि वो हमें ख़ुशी देता है, लेकिन बाद में जब लोगों को उस रिश्ते से सुख की प्राप्त नही हो पाती तो वो उसी को बंधन का नाम देते हैं।

यह बात समझना की सुख और दुःख दोनों प्रकृति के अन्दर मौजूद है और यह हमेशा बंधन को साथ लेकर आते हैं, इसलिए कई बार जब लोगों को इस बात का अहसास होने लगता है तो वह रिश्तों को बंधन बताने लगते हैं।

ख़ुशी दने का मतलब यह कतई नहीं की कोई आपको प्रेम करता है, आचार्य जी समझाते हैं अगर कोई नीबूं पानी की बोतल में भी शराबी को शराब देता है तो निश्चित ही शराबी को ख़ुशी होगी।

लेकिन **क्या ये प्रेम है**? दूसरी तरफ अगर कोई शराब के बोतल में भी शराबी को नींबू पानी दे दे... ताकि उसका स्वास्थ्य सही रहे तो निश्चित ही शराबी उस व्यक्ति को गरियायेगा लेकिन ये प्रेम है

प्रेम मुक्ति है, ख़ुशी नहीं

आचार्य जी कहते हैं " दुर्भाग्य से प्रेम के इस मुद्दे को सही से न समझने के कारण प्रेमी आपस में कितना सारा समय, उर्जा, संसाधन खर्च करते हैं" लेकिन प्रेम से फिर भी वो वंचित हो जाते हैं!

हम इस आशा में रहते हैं की प्रेम करने पर हमें सुख मिलेगा या दूसरे को सुख मिलेगा परन्तु वास्तव में प्रेम तो हमें बोध, मुक्ति और आजादी देता है!

इसलिए तो हमें प्रेम करने वाले काफी कम होते हैं, आप देखिये आपको उन लोगों के नाम भी पता नहीं होंगे जो आपको प्रेम करते हैं।

आप अपने दोस्त, परिवार,रिश्तेदारों को अपना प्रेमी मानते हैं लेकिन वो आपसे प्रेम नहीं करते बस वो आपसे सुख दुःख बांटते हैं।

उन्हें आपकी आजादी से कोई मतलब नहीं है, उनके बीच बस सुख दुःख का लेनदेन है।

प्रेम करने वाला व्यक्ति कभी दूसरे से किसी चीज़ यानी किसी सुख को पाने के खातिर उससे प्रेम नहीं करता, क्योंकि प्रेम भिखारी नहीं होता, बस उसकी अधिक से अधिक चाह यही होती है की प्रेम के खातिर हम आपके लिए जो कुछ कर रहे हैं उसमें हमें रोकों मत, गरियाओ मत।

एक परेशान आदमी की चाहत होती है शांति की, एक बंधन में फंसे व्यक्ति की चाहत होती है मुक्ति और एक बेईमान इंसान को जरूरत होती है सच्चाई की और ये सब जो आपको देने के काबिल हो वही आपका प्रेमी है!

अन्यथा बाकी कुछ भी प्रेम नहीं हो सकता!

प्रेम करना या पाना कठिन है?

सच्चा प्रेम हमें चुनौती देता है हमें बेहतर होने के लिए, वो हमारी खराब जिन्दगी से हमें आजाद कर मुक्ति की तरफ बढ़ने के लिए प्रेरित करता है!

आप जो हैं, प्रेम आपको वह होने नहीं देता, प्रेम आपको ऊँचा और ऊँचा उठने के लिए प्रेरित करता है, अगर दिखे तुम्हे कोई जो ऊँचा उठाये तो समझ लेना वही आपका सच्चा प्रेमी है!

इसलिए तो एक सच्चा प्रेमी होना या प्रेम पाना बहुत मुश्किल है, इस राह में भलाई के खातिर हमें कई बार गलियां भी खानी पड़ती है!

और आखिर में ये बात ध्यान देना की कोई तुम्हें सुख दे या तुम किसी को सुख दो वो प्रेम बिलकुल नहीं हो सकता।

प्रेम का नाम, हवस का काम | Chpater 7 Book Summary in Hindi

पिछले अध्याय में हमने सीखा था की **प्रेम को ना तो भीख में माँगा** जा सकता है और न इसे दया में दिया जाता है, आज हम **प्रेम सीखना पड़ता है** नामक इस पुस्तक के एक नए रोचक और महत्वपूर्ण अध्याय का अध्ययन करेंगे। जिसका शीर्षक है प्रेम का नाम, हवस का काम।

अक्सर लोगों के बीच यह बड़ी गलतफहमी होती है की प्यार का सीधा सम्बन्ध कहीं न नहीं सेक्स से होता है, दो प्रेमीजन आपस में बेहद प्रेम करते हैं, इस वाक्य से हम और क्या सोचेंगे?

पर आचार्य जी हमारी इस पुरानी धारणा को तोड़ते हैं और बताते हैं वास्तव में प्यार और सेक्स दो बिलकुल अलग चीजें हैं! अध्याय की शुरवात इस मुख्य प्रश्न से होती है।

फिजिकल love क्या होता है? | Chapter 6 Summary in Hindi

अध्याय की शुरुवात में प्रश्नकर्ता पूछ रही हैं

“आचार्य जी मैं एक लड़के के साथ पिछले 4 सालों से समबन्ध में हूँ, मुझे इससे बाहर आना है लेकिन चूँकि लड़के को मुझसे फिजिकल लव ही चाहिए, और मैं अब इससे उब चुकी हूँ। अब मैं कैसे इस स्तिथि से बाहर निकलूँ क्योंकि प्रेम तो लड़के को भी उतना ही है जितना मैं उससे करती हूँ”

इस सवाल के जवाब में आचार्य जी सीधा कहते हैं।

” वास्तव में प्रेम तो न आपको है और न उस लड़के को” पर चूँकि ये छोटी सी चीज़ आपको समझ आ जाती तो शायद आप ये प्रश्न नहीं करती, इसलिए मुझे जरा इस विषय को विस्तार से समझाना होगा।

आचार्य जी कहते हैं

” धन्य हो ये फिजिकल लव जैसी भी कोई चीज़ होती है, मुझे आज पता चला, पहली बात फिजिकल लव जैसी कोई चीज़ होती नहीं ये शब्द आप उसी तरह प्रयोग में ले रही हैं जैसे अंग्रेजी में सेक्स को *मेकिंग लव* कह दिया जाता है”

प्रेम का अर्थ है भलाई, शरीर पर चढ़ना नहीं

प्रेम का सीधा मतलब होता है “दूसरे का हित, भलाई चाहना” बस इतना ही, प्रेम का मतलब ये नही होता की तुम किसी के शरीर पर चढ़ जाओ और कसकर उसे लपेट लो सांप की भांति और उसे छोडो मत.. बिलकुल नहीं इसको आप हवस का नाम दे सकती हैं पर प्रेम का नहीं”

एक बात बताइए पिछले 4 सालों से बॉयफ्रेंड के साथ समबन्ध बनाकर आपकी क्या भलाई हुई है?

थोड़ी देर का शारीरिक सुख जरूर आपको मिल जाता होगा। इसके अलावा ” क्या तुम्हारी जिन्दगी बेहतर हुई है?, आपका डर , लालच थोडा कम हुआ, तुमने कुछ ज्ञान प्राप्त किया, या जीवन में बेचैनी, निर्भरता कम हुई है”

जवाब होगा “नहीं”.. तो फिर इस कामवासना को प्रेम का नाम देकर, इस शब्द की अवमानना क्यों करते हो?

प्यार कोई रसायन, हार्मोन नहीं होता

आजकल के बच्चे उम्र होती नहीं 16-17 और कामवासना इनकी चरम सीमा पर होती है, कहेंगे हमें भी प्यार हो गया!

हो गया.. हमें भी हो गया कल रात प्यार हो गया… हैं ये क्या?

उम्र बढ़ने के साथ प्राकृतिक रूप से कुछ रसायन (हार्मोन) फूटने लग गये हैं, तुम भी अब बच्चे पैदा करने के लिए तैयार हो रहे हो।

इसका मतलब ये थोड़ी है की तुम्हारे अन्दर प्रेम आ गया, प्रेम तो सीखना पड़ता है ये यूँ ही अचानक नहीं आ जाता, इसके लिए कठिन साधना करनी पड़ती है"

एक रात में तुम्हें दस्त, बदहजमी हो सकती है लेकिन प्यार नहीं हो पायेगा।

प्रेम का अर्थ है जहाँ पर आपका हित दूसरों की भलाई के आगे छोटा हो जाता है, तो सोचिये जरा... मन को निर्मल करके, निर्भय करके उसे उस हालात में ले जाने में कितनी सहनशीलता और श्रम चहिये।

उम्र के साथ गहराता है सच्चा प्रेम

आचार्य जी कहते हैं "अगर मैं ये कहूँ की उम्र बढ़ने के साथ प्रेम में गहराई आती है, इसे सीखने में कई बार चालीस साल भी लग सकते हैं'

श्रोतागण हंसने लगते हैं "अब मेरे ऐसा कहने पर कुछ कहेंगे " तो क्या प्यार 60 साल की उम्र में करेंगे"

ये देखिये मन यहाँ ये पूछने को बेताब है की इसका मतलब है सेक्स 60 साल की उम्र में करेंगे...

इसलिए तुम्हें लगता है प्यार और सेक्स के बीच कुछ गहरा ताल्लुक है, नहीं तो तुम हँसते नहीं।

फिर कह रहा हूँ प्यार कोई औनी पौनी चीज़ नहीं है, ये प्राकृतिक नहीं होता इसे सीखने में समय और श्रम लगता है।

उम्र के साथ प्रेम में गहराई आती है, और वह और मीठा होता है। कई लोगों की तो जिन्दगी बीत जाती है परन्तु व्यक्ति को प्रेम का प पता नही हो पाता।

प्यार करना सूरमाओं का काम

आचार्य जी आगे कहते हैं की प्यार कोई विरला ही कर पाते हैं, क्योंकि प्यार वो नहीं है की आज किसी के प्रति आकर्षण हुआ, कुछ दिनों बाद उसे आई लव यु कहा और फिर कुछ दिन तक प्यारी-प्यारी बातें करके उसके साथ सेक्स कर लिया और फिर कुछ समय बाद उसे अलविदा कह दिया!

बिलकुल नहीं... प्रेम वो जो तुम्हें आजाद कर दे तुम्हारे बन्धनों से, न तो तुम प्रेम जानते न भावना और न ही इस शरीर को.. इसलिए प्रेम को प्रत्येक क्षण हवस का नाम देने को तैयार रहते हो।

बेबी – बेबी वाला प्यार Chapter 8 | Full Book Summary in Hindi

प्रायः आप देखते होंगे जब एक जोड़ा आपस में नजदीक आता है, फिर चाहे वह पति पत्नी हो, आजकल के युवक/युवतियां हो या फिर लिव इन रिलेशनशिप में रहने वाले लोग, अक्सर ये प्यार में एक दुसरे को बाबु, बेबी कहकर बुलाते हैं! **बेबी बेबी वाला प्यार**

इस अध्याय में आचार्य जी इस बेबी बेबी वाले प्यार की हकीकत हमारे सामने रखते हैं। और बता रहे हैं ये बेबी सोना बोलने के पीछे इंसान की मंशा क्या होती है? क्यों किसी से सुख भोगने के लिए ये कहना जरुरी हो जाता है? इन विषय पर विस्तार से इस अध्याय में चर्चा की गई है!

प्यार में एक दूसरे को बेबी बोलने की असली वजह

प्रश्नकर्ता"- " **आचार्य जी** आजकल के छोटे बड़े सब आशिक एक दुसरे को प्रेम के नाम पर बेबी-बेबी क्यों कहते हैं? क्या वजह होगी"

आचार्य जी:- देखिये, बेबी मतलब क्या होता है एक बच्चा, जिसका शरीर सॉफ्ट/कोमल होता है, उसमें समझ चेतना बिलकुल शून्य होती है! और जागरूकता न होने की वजह से उसे जिस राह ले चलो ये उसी राह चल देगा! इसलिए एक बचा सिर्फ देह/शरीर मात्र होता है।

समझिये इंसान प्यार के नाम पर दो चीज़े कर सकता है, एक ये की वो अपने प्रेमी को बच्चे से बड़ा बना दे, दूसरा उसकी चेतना, समझ को खोखला करके उसे बड़े से बच्चा बना दे।

और समाज में अधिकतर लोग आपकी चेतना को गिराने का करते हैं, क्योंकि किसी को बेबी बनाकर जो सुख आप उससे लेना चाहते हैं वो मिलना बहुत आसान हो जाता है।

और प्रेम में किसी को बेबियाना का सीधा अर्थ है की आप दूसरे व्यक्ति को भी बेबी के तल पर लाना चाहते हैं, एक बेबी को जैसे चाहे अपनी बात मनवा सकते हो, उसके मुंह में आप कुछ भी डाल सकते हो, उसके कपडे खोल सकते हो! और मीठी मीठी बातें करके कोई लालच देकर जैसा चाहे उसके साथ कर सकते हो।

इसलिए जब किसी अधेड़ उम्र की **स्त्री या पुरुष को बेबी** बनाया जाता है। तो शरीर से तो वो बिलकुल सुडौल, चुस्त दुरुस्त लेकिन चेतना उसकी बिलकुल निम्न, इसलिए फिर ऐसे लोगों के प्यार में आपको नंगापन देखने को मिलता है, समझदारी नहीं।

आचार्य जी कहते हैं एक बेबी वो होता है जिसका मानसिक स्तर बिलकुल जीरो हो, जिसके पास खुद के बचाव की शक्ति नहीं होती, अतः कृपा करके किसी का बेबी मत बन जाना…

प्रेम में मैच्योरिटी आपको सुहाएगी नहीं

आगे आचार्य जी कहते हैं **सच्चा प्रेमी** अगर आपको कहीं मिल भी गया जो तुम्हारे भले के लिए आपकी समझ को ऊँचा उठाये, तुम्हें सही मार्ग पर ले जाए वो व्यक्ति तुम्हें भायेगा नहीं..

उल्टा कह दोगे की ये समझदारी यहाँ नहीं चलेगी, जैसे है हम अच्छे हैं, हम अच्छे नहीं लगते तो निकलो अपने रस्ते।

आप सोचिये कोई बुद्ध जैसा व्यक्ति आपके जीवन में आये, जिसकी चेतना बिलकुल उच्च स्तर पर हो, उसका आईक्यू 150 हो, जो जान रहा हो आपको देखकर आपके मन की स्तिथि क्या है, क्या तुमको ऐसे से प्यार आएगा।

इसलिए जिन्दगी चाहे कितनी भी गई गुजरी चल रही हो, किसी ऐसे व्यक्ति की संगती करने के बजाय जो तुम्हारे जीवन को ऊँचा उठाये तुम्हारे डर, लालच, निर्भरता को कम करे।

तुम किसी ऐसे का हाथ पकड लेते हो जो बिलकुल अपने स्वार्थ के लिए आपका शोषण करने के लिए तैयार बैठा हो।

और वो चाहते ही हैं आप खुद को बेबी मानें

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी पिछले कुछ सालों में बॉलीवुड में ये बेबी वाला ट्रेंड बहोत चल रहा है, इसका असर युवाओं और मूवी के दर्शकों पर भी देखने को मिलता है”

आचार्य जी:- एक 18 वर्ष की युवती जिसे चार लोग हर समय बेबी-बेबी कहकर बुलाते हो, स्वयं घर में उसे बेबी कहकर सम्बोधित किया जाता हो तो फिर वो खुद को बेबी मान ही लेती है।

उम्र के साथ जहाँ उसमें परिपक्वता आनी चाहिए थी, इसके उलट उसका व्यवहार, आचरण, रहन सहन, कपडे बिलकुल एक बेबी के समान हो जाते हैं।

और समाज में एक वर्ग बिलकुल तैयार बैठा है जो चाहता ही है की आप बेबी बने रहें.. ताकि अपना मतलब साधने में उन्हें बड़ी आसानी हो।

क्योंकि एक व्यस्क स्त्री जिसमें परिपक्वता है, समझदारी है ऐसे को अपने झांसे में लेकर उसका शोषण करने में बहुत शक्ति चाहिए।

लेकिन जब उन्हें कोई मिल जाये ऐसा जिसकी चेतना पहले से ही बिलकुल शून्य है, तो फिर अपनी हरकतों को अंजाम देना उनके लिए बहुत आसान हो जाता है।

रिश्ते में सूखापन, प्रेम की कमी क्यों

प्रश्नकर्ता पूछ रहे हैं ” आचार्य जी ऐसे भी प्रेमी जोड़े होते हैं जिनमें बहार से बौद्धिक चर्चाएँ होती है, और जीवन उनका सामान्य जैसा प्रतीत होता है, पर प्रेम की कमी और सूखापन उनके रिश्तों में भी साफ़ दिखाई देता है”

आचार्य जी:- सच्चा प्रेम तीसरे तल की बात होती है, क्योंकि प्रेम न तो शरीर से होता है और न विचारों से, प्रेम तो विचारों से भी ऊपर उठ जाता है।

आपकी बात से बिलकुल सहमत हूँ की दो लोग या **पति–पत्नी** जिनके बीच बौद्धिक चर्चाएँ होती हों, और स्पष्ट तौर पर किसी तरह का द्वेष न दिखाई देता हो पर उनके बीच प्रेम न हो.. ये सम्भव हो सकता है क्योंकि ये बौद्धिक चर्चा करने वाला भी शायद अहंकार ही हो।

प्रेम तो वहां है जहाँ इन्सान अपना स्वार्थ भूल जाता है, और कहता है मेरी फिक्र छोडो मेरे साथी का भला होना चाहिए, और जो इंसान ये कह पा रहा है और वाकई करके दिखा रहा है समझ लो वो अब ऊपर उठ चुका है।

इसलिए ये नियत की बात है की तुम आखिर चाहते क्या हो?

घर में अभिभावकों द्वारा बच्चों को बाबु कहना

प्रश्नकर्ता: "आचार्य जी, महज टीवी, फिल्मों और समाज में ही नहीं बल्कि घरों में प्रायः वयस्कों पर भी माता पिता द्वारा बच्चों की तरह व्यवहार किया जाता है, कहाँ तक ऐसा उचित है "

आचार्य जी : ये सही प्रश्न उठाया, बेटा हो गया है तीस साल का लेकीन माँ का व्यवहार अभी भी उससे 5 साल के बच्चे की तरह है।

आचार्य जी कह रहे हैं पुराने उदाहरणों को देखिये भारत में तो ये परम्परा रही है की माँएं भी एक उम्र के बाद पुत्रों को **आप** कहकर सम्बोधित करती थी।

माँ जानती थी की मैं बच्चे की शुभचिंतक हूँ, चूँकि उम्र के साथ बेटे की चेतना भी अब जवान हो चुकी है इसलिए बेटे/बेटी को मात्र शरीर की तरह नही देखा जाता था।

उन्हें प्रायः उनकी उपलब्धि के आधार पर सम्बोधित किया जाता था. पर आजकल ऐसा न होने के पीछे हमारी विकृत प्रेम की परिभाषा और शिक्षा व्यवस्था जिम्मेदार है जो हमें विजडम एडुकेशन से वंचित रखती है!

क्या प्रेम एक भावना है? Chapter 9 | Full Summary in Hindi

हम अक्सर अपने Emotions को प्रेम कहते हैं (भावनाओं को), हमें यदि किसी विशेष तरह की क्रिया करने से या व्यवहार करने में मजा आता है तो हम कह देते हैं मुझे उस व्यक्ति या वस्तु से प्रेम है। **क्या प्रेम एक भावना है?**

पर क्या प्रेम सिर्फ एक फीलिंग है? क्या जैसे बाकी इमोशन ख़ुश होना, दु:खी होना,क्रोध,ईर्ष्या इत्यादि हमारे जीवन में आते हैं? इसी तरह प्रेम भी एक फीलिंग की तरह होता है जो कभी आता है जीवन में और कभी चला जाता है?

इसी को समझेंगे आज हम **प्रेम सीखना पड़ता है**, नामक इस पुस्तक के नौंवे अध्याय में, और जानेंगे सच्चे प्रेम और भावना में कितना अंतर होता है? तो आइये पढना शुरू करते हैं।

काम ऐसा चुनो जो नींद उड़ा दे

प्रश्नकर्ता: "आचार्य जी बचपन से ही मेरा किसी भी महत्वपूर्ण काम में मन नहीं लगता, जानता हूँ की वो काम करना जरुरी है पर फिर भी नींद आने लगती है"

आचार्य जी:- नींद तो आएगी ही प्राकृतिक है, भीतर बैठा अहंकार कुछ भोगना चाहता है तो कुछ और न मिले तो नींद का सुख भोगने में भी उसे बड़ा आनंद आता है, आमतौर पर हम काम ऐसा चुनते हैं जो नींद से बदतर होता है।

हमें लगता है रात को सिर्फ चोर को या डर और वासना में लिप्त इन्सान को नींद नही आती, लेकिन एक साधक भी तुम्हें दिखाई दे सकता है जो रात भर पुस्तकालय में पुस्तकों का अध्ययन कर रहा हो।

कहने का अर्थ है काम ऐसा चुनो जो तुम्हारी नींद, भूख को भुला दें, अन्यथा शरीर तो इन चीजों की मांग करेगा ही, लेकिन **जीवन में कुछ** तो इतना प्यारा हो जो नींद को भी अलविदा कह दे।

प्रेम और भावना में अंतर

आचार्य जी कहते हैं भावना और प्रेम दोनों में कोई समानता नहीं।

भावनाएं इस शरीर से अर्थात मिटटी से उठती है। अतः भाव रासायनिक होते हैं, इसलिए यह शरीर की आवश्यकता के अनुसार बदलते रहते हैं, कभी क्रोध आ गया, कभी कुछ खाने को मन ललचा गया, या मन में वासनाएं आ गई ये सभी फीलिंग्स इस संसार के अन्दर की है।

लेकिन प्रेम संसार से बाहर की चीज़ है, और जिसके जीवन में प्रेम है वहां भावनाओं का आकर्षण खत्म हो जाता है, क्योंकि राग और द्वेष दोनों चीजें भावनाओं में होती है लेकिन प्रेम न तो द्वेष जानता है न राग।

अगर तुम्हारी चाह है शरीर में अच्छी-अच्छी भावनाएं आ जाये, तो मार्केट में कई सरे टेबलेट्स और इंजेक्शन आते हैं जो तुरन्त तुम्हारे मूड को बदल कर जैसी चाहे वैसी फीलिंग देने को तैयार रहते हैं!

जो मारग साहब मिले, प्रेम कहावै सोय

दूसरी तरफ प्रेम चूँकि दुनिया के पार का है इसलिए उसे ज्यादा मतलब ही नहीं है इस संसार से और भावनाओं से, उसे इस पृथ्वी में रहने वाले सोनू-मोनू, अंटू बंटू से कोई मतलब ही नहीं है।

उसे प्रेम है सिर्फ ऊपर वाले यानी सत्य से, इसलिए चूँकि गंदगी और साफ़ सफाई दोनों एक साथ नहीं चल सकती, अतः ऐसा नहीं हो सकता की वो अंटू बंटू से भी प्रेम करें और परमात्मा यानी सत्य से भी।

इसलिए जहां भाव है वहां प्रेम नहीं हो सकता, लेकिन चूँकि सिनेमा और टीवी ने हमें यही सिखाया है न की ममता और प्रेम एक जैसे होते हैं, दुसरे से चिपका चिपकी करो, फलाने से सुख भोगो और उसे सुख दो यही प्रेम होता है।

लेकिन मै कहता हूँ प्रेम तो निर्मम होता है, आगे आचार्य जी **प्रेम** को और बारीकी से समझाते हैं।

जब सभी भावनाएं प्रेम के वश में चलती हैं?

जब व्यक्ति प्रेमी होता है तो फिर प्रेम में उसकी भावनाएं भी छाया की तरह ही उधर की ओर चलती है जहाँ प्रेम ले जाना चाहता है, अब अगर उसे क्रोध भी आएगा तो तभी, जब उसे कोई उसकी तरफ (ऊपर वाले) जाने से रोके!

उसे ममता का भाव भी आएगा पर सिर्फ उसके लिए, वो संसार में रहकर सब कुछ करेगा लेकिन लक्ष्य उसका एक रहेगा, वो अच्छे कपडे भी पहनेगा पर इसलिए नहीं दूसरों को आकर्षित करने के लिए!

बल्कि उस तक पहुचने के लिए, उसी तरह उसके लिए बढ़िया खाने से आशय क्या? जो भोजन उस तक पहुँचने के मार्ग तक ले जाये!

यानि खाना पीना, घूमना फिरना उठना बैठना सब कुछ उसका अन्य सांसारिक लोगों की तरह रहेगा! लेकिन इन सब क्रियाओं के बीच मन के केंद्र में वही रहेगा जिससे प्रेम है,

तो इस तरह आचार्य जी अंत में समझाते हैं की प्रेम और भावना दोनों अलग हैं! लेकिन जीवन में प्रेम है तो वो भावनाएं उसी तरह पीछे पीछे चलती है जैसे रेल के डिब्बे इंजन के पीछे चलते हैं!

रिश्तों में प्रेम क्यों नहीं है? Chapter 10| Book Summary in Hindi

हम में से कई लोग आजकल रिश्तों में प्रेम की कमी, सूखापन देखते हैं, पर वास्तव में इसका कारण क्या है? हम कभी जानने की कोशिश ही नहीं करते की आखिर रिश्तों में प्रेम क्यों नहीं है?

इसलिए इस अध्याय में आचार्य जी और प्रश्नकर्ता के बीच गहरी बातचीत होती है, जिससे ये साफ़ जाहिर हो जाता है की हमारे रिश्तों में **प्रेम को छोड़कर** बाकी चीजें कैसे आ जाती है? आइये इस अध्याय को मिलकर पढना शुरू करते हैं।

रिश्तों में प्रेम न होने का कारण?

प्रश्नकर्ता:" आचार्य जी, **रिश्तों में प्रेम** नहीं दिखाई देता आजकल"

आचार्य जी: किसके?

प्रश्नकर्ता: सबके

आचार्य जी : ये कैसे मालूम दूसरों के रिश्तों में नहीं है?

प्रश्नकर्ता: क्योंकि हमारे नहीं है।

आचार्य जी: तो ये कहिये ना की हमारे रिश्तों में प्रेम नहीं है, क्योंकी बाकियों के रिश्तों का तुम्हें कैसे पता?

प्रेम का अर्थ होता है "सरलता" प्रेम जिद्दी होता है एक बच्चे की भाती, उसे कोई चीज़ भा गई तो उसे वही चाहिए होती है, लेकिन हमारे अन्दर वो जिद्दीपन है ही नहीं।

हम तो हर चीज़ में बेहतर देखते हैं, हमारे पास कुछ ऐसा नहीं है जो खरीदा न जा सके, कोई कहे ईमान बेचने को राजी हो.. हम कहेंगे नहीं….

100 हम कहेंगे न, कोई कहे हजार, हम कहेंगे न, कोई कहे लाख तो हम कहेंगे नहीं..

और कोई कहे करोड़ तो कहेंगे ….अहम्म और वो फिर कहे 10 करोड़ तो हम कहेंगे जी बात बन सकती है!

देख पा रहे हो हमारे पास ऐसा कुछ है ही नहीं जो Not For Sale नहीं होता। दुकान पर जाते हैं हम किसी चीज़ के लिए अगर दुकानदार बोल दे इस ब्रांड का सस्ता और अच्छा मिलेगा तो हम वही खरीद लाते हैं!

हम ऐसे हैं!

जो खरीदने निकला हो वो बिक सकता है, जो बिकने निकला हो वो नहीं खरीदा जा सकता

आचार्य जी कहते हैं हम ग्राहक लोग है हमें मोल भाव में जो सही मिल गया हम उसको पाना चाहते है, इसलिए हमारी इच्छा हर दम बदलती रहती है। हमारे पास ऐसा कुछ नहीं बेहतर जो हमें मिल गया हो और उसके बाद हमें बेवफाई मंजूर हो परन्तु वफा नहीं करेंगे!

प्रश्नकर्ता: हम मोल भाव क्यों करते हैं?

आचार्य जी: क्योंकि हम छोटी चीज़ की मांग रखते है, किसी ऐसी चीज़ की नहीं जो मूल्यहीन हो। कोई चीज़ जो तुम्हें असंख्य रुपयों में मिलती हो और वो तुम्हें मिल जाये तो तुम मोल भाव करोगे?

नहीं न, लेकिन हम क्षुद्र छोटी चीज़ की ही इच्छा रखते हैं इसलिए कई बार वो बड़ी चीज़ मिल भी रही हो जो अनंत हो, जिसकी कीमत न हो तो हम उसकी उपेक्षा कर देते हैं।

मानव होने का अर्थ है हमारे अंदर अनंत सम्भावनाएं हैं, और कई बार ये पता भी चल जाये तो इंसान डर जाता है, मानने को राजी नहीं होता की वो इतना बड़ा है!

नतीजा उम्र बढती रहती है और एक इंसान जो 25-30 का हो गया है वो फिर भी ऐसा आचरण, व्यवहार करता है जैसे **10-15 साल के बच्चे**, वो मानने को ही तैयार नहीं है की हम बड़े हो गए है।

ऐसा करने में स्वार्थ भी है और यह मनोरोग भी है, फिर इंसान बड़ी जिम्मेदारी से बच जाता है न, और ये एक तरह का मनोरोग है बहुत लोग कहते हैं बीमार रहते हैं तो बहुत सुविधा मिलती है, आस पास नौकर चाकर रहते हैं!

लेकिन ये तो मानते हो जो बात स्वस्थ्य रहने में है वो बीमारी में नहीं, अध्यात्म में बीमारी जैसी चीज़ नहीं है वहां आत्मा की बात होती है और आत्मा कभी दुर्बल, अहसाय, कमजोर नहीं होती, शरीर बूढा हो सकता है परन्तु आत्मा सदैव जवान रहती है।

कुछ सुख सुविधा पाने के खातिर तुम खुद को बीमार घोषित कर बैठे हो, लेकिन याद रखना असल में कोई बीमारी है ही नहीं बस माया के फेर में फंसे हुए हो!

राधा- कृष्ण में भी प्रेम था, पर हमारे प्रेम को सम्मान क्यों नहीं? Chapter 11

वे लोग जो किसी प्रेम प्रसंग में हैं, और इन्टरनेट पर प्रेम के सम्बन्ध में आचार्य जी की वीडियोस देखते है, उन्हें अहसास होता है की आचार्य जी की बातों में आजकल के प्रेम को लेकर बड़ी कठोरता है।

इसलिए उन्हीं लोगों में से एक व्यक्ति ने प्रेम को लेकर बेहद महत्वपूर्ण सवाल किया है। जो सम्भव है आपके भी मन में कभी आया हो? तो आइये समझते हैं इस पूरी बातचीत को प्रेम सीखना पड़ता है, नामक इस पुस्तक के 11वें अध्याय में!

हमारा प्रेम और राधा-कृष्ण के प्रेम के बीच का अंतर

प्रश्नकर्ता:- आचार्य जी कल से लगातार प्रेम पर आधारित **आपके वीडियोस** देख रहा हूँ, प्रेम तो राधा -कृष्ण और प्रभु श्री राम और माता सीता के बीच भी हुआ था? परन्तु आप हमारे प्रेम को लेकर क्यों इतना रोष प्रकट करते हैं?

आचार्य जी:- क्योंकि आपका प्रेम वैसा नहीं है न जैसा राधा -कृष्ण और श्री राम और सीता का था, आप कृष्ण का जीवन देखो और कहाँ अपना।

कृष्ण से अपने प्रेम की तुलना करने से पहले ये जान तो लेते की कृष्ण और राम का जीवन कितना ऊँचा था, तो फिर प्रेम भी उनका किस स्तर का होगा?

ऊँचे लोगों के प्रेम में भी गहराई होती है इसलिए सदा के लिए उनका प्रेम स्मरणीय और अमर हो जाता है।

कृष्ण के जीवन में धर्म से रक्षा, अविश्वसनीय और साहसिक कार्य हैं। वहां अन्याय का सख्त विरोध है इसलिए उनका जीवन बहुत उच्च कोटि का है।

इसलिए गीता की उंचाई, कृष्ण का जीवन और फिर उनका प्रेम इन तीनों का तल बेहद ऊँचा है! इसी तरह राम जी का जीवन बताता है की उनका प्रेम भी उच्चकोटि का था।

औसत आदमी की औसत प्रेम कहानी

तुम औसत आदमी, तुम्हारे जिन्दगी के निर्णयों में बोध नहीं, जिन्दगी में तमाम तरह के भ्रम है, बेचैनी है तो बताओ न क्या प्रेम भी तुम्हारा उत्कृष्ट हो सकता है?

जब जीवन के सभी निर्णय तुम बेहोशी में लेते हो तो बताओ तुम्हारा प्रेम कैसे होश हो गया होगा, नहीं प्रेम तो बस हो गया। अरे, कोई नशे में घटने वाली घटना है की हो गया?

जब तुम आकर्षण का अर्थ नहीं जानते? तो बताओ **प्रेम को कैसे समझ सकते हो**?

लेकिन तुम्हारा अहंकार चरमसीमा पर है, जो कहता है हम तो जैसे हैं वैसे ही रहेंगे, लेकिन हमारे प्रेम की तुलना भी रोमियो -जूलियट, राधा कृष्ण और शिव पार्वती से कम न हो।

तुममें भी है कृष्ण बनने की सम्भावना

आचार्य जी आगे कहते हैं ऐसा नहीं है तुम्हारा प्रेम राम और कृष्ण जैसा नहीं हो सकता, सम्भावनाओं के बीज तुममे भी हैं बशर्ते उन बीजों को तुम अंकुरित करो।

और शुरुवात तुम्हें यथार्थ से करनी होगी तुम्हें जानना होगा की प्रेम की मान्यता और अवधारणायें कितनी उल्टी रहती है, इसलिए फिर मुझे ऐसे तथाकथित प्रेमियों को कठोर बातें कहनी पड़ती हैं।

लेकिन सच्चाई स्वीकार करने में तो दर्द होता है, फिर जीवन बदलना पड़ता है, उसमें तकलीफ होती है, लेकिन नहीं हमें रहना भी निम्कोटी का है और प्रेम भी हमारा राधा कृष्ण जैसा हो।

मेरी बातों से विरोध उठ रहा है, तो जरा देखो अपने आस पास जो युवा प्रेमी जोड़े घूम रहे हैं, देखो न कितना पावन प्रसंग है इनका

और फिर तुम इन्हीं बेफजूल की चीजों की **प्रेम का नाम देने** लगते हो।

लक्षण शुभ है, प्रेम की राह बढ़ते चलो

अंत में आचार्य जी कह रहे हैं की अपने प्रेम की तुलना तुमने राम और कृष्ण से की, ये लक्षण शुभता के है, अब करो पहले जीवन में राम और कृष्ण जैसी ऊँचाइयों को हासिल और फिर वहां पहुचकर अगर तुम्हारा किसी से आकर्षण हुआ तो फिर वो प्रेम भी उंचे तल का होगा और शुभ होगा!

अन्यथा उस उंचाई को हासिल किये बिना प्रेम की तरफ बढोगे तो फिर वही जीवन में फिसलते रहोगे कभी इधर कभी उधर और जीवन अपना व्यर्थ गँवा दोगे!

क्या प्रेम की कोई परिभाषा नहीं होती? Chapter 12 | Full Summary in Hindi

प्रेम को लेकर दिन में आचार्य जी को सैकड़ों प्रश्न/ कमेंट्स आते हैं, उनमें से अधिकांश सवाल आशिकों के प्रेम को लेकर आचार्य जी की कठोरता से जुड़े होते हैं? (क्या प्रेम की कोई परिभाषा नहीं होती? Chapter 12)

कई लोगों को लगता है आचार्य जी हम सामान्य लोगों के **प्रेम को नहीं समझते**, और उसकी अवमानना करते हैं, इसी तरह का एक प्रश्न आचार्य जी के समक्ष आया है, और हमेशा की तरह आचार्य जी बड़े सहज और सीधे अंदाज में इस प्रश्न का उत्तर देते हैं!

क्या प्रेम की कोई परिभाषा नहीं होती?

प्रश्नकर्ता" " आचार्य जी आप लगातार सांसारिक प्रेम को झूठा सिद्ध करने में लगे रहते हैं, जब बड़े बड़े ऋषि, ज्ञानीजन प्रेम की परिभाषा नहीं दे सके तो आपको कैसे पता हमारा प्रेम सच्चा है या नहीं"

आचार्य जी: ये बढ़िया तरीका खोज निकाला है अपने प्रेम की वास्तविकता को न जांचने का ऐसा कहके तुम्हारे प्रेम में शरीर कितना है, मन कितना है, धोखा कितना है इन सब को न जांचने का..

मेरी वीडियोस आपको 2 श्रेणियों में मिलेंगी एक श्रेणी धर्म, संतों ज्ञानियों पर होती है जिसमें प्रेम की अक्सर चर्चा होती है, उन वीडियोस को लोग अक्सर नकार देते हैं दूसरी तरफ सांसारिक मुद्दों पर होती है वो लोग खूब देखते हैं!

प्रेम-प्रेम सब कहते हैं, पर प्रेम का अर्थ कोई नहीं जानता

अब एक बार फिर कहता हूँ !

प्रेम-प्रेम सब कोई कहें, **प्रेम न जाने कोय** | जा मारग साहब मिले प्रेम कहावै सो होय |

तो प्रेम की इस परिभाषा को अब तक सुना नहीं था, तो सुन लो ध्यान से रट जो और अन्दर तक लहू में बहा लो..

कहे रहे हैं प्रेम प्रेम जपता हर कोई मिलेगा! लेकिन प्रेम जानता कोई नहीं है, तो फिर यह प्रेम मिलता कैसे है? बोल रहे हैं जिस रस्ते पर साहब यानी वो जो सबसे ऊँचा है, वो मिलता है!

अर्थात जहाँ जाकर तुम्हारे जीवन में सच्चाई, शांति आती है तुम्हारी चेतना साफ होती है और आप सभी बन्धनों से मुक्त होते हो वही मार्ग साहब का होता है!

बाकि इसके अलावा और कुछ प्रेम नहीं होता

प्रेम जो आ जाए, और फिर चले जाए वो प्रेम नहीं होता

आचार्य जी कह रहे हैं प्रेम वो नहीं जो जीवन में किसी के आने से आ जाये, और उसके जाने से चला जाये, प्रेम न तो किसी घटना का नाम है और न ही व्यक्ति का नाम..

पर हम तो इसी भ्रम को प्यार का नाम देते हैं! हमें फिल्मों ने और कुछ प्रसिद्ध शायरों और गायकों ने सिखा दिया है प्रेम तो एक शक्स से होता है, जिसके आने से जिन्दगी में बहार आती है और जाने से मातम छा जाता है!

आगे आचार्य जी कहते हैं भीतर तुम्हारे अन्दर जो अपूर्णता होती है जो अन्दर ही अंदर घुटता सा रहता है, उसे हम विरह कहते हैं वास्तव में यही प्रेम का दूसरा नाम है!

और ये कशिश, ये बेचैनी तुम्हारे पैदा होने से ही तुम्हारे साथ है, किसी के जीवन में आने से वो अन्दर प्रवेश नहीं करती! तुम्हारी चेतना की मूल तड़प सदा से ही प्रेम के लिए प्यासी है!

इसलिए जिस मारग साहब मिलते हैं जहाँ पहुचकर हमें चैन मिलता हो, मुक्ति मिलती हो उसी मारग को वास्तव में प्रेम कहते हैं! लेकिन प्रायः आप जिसे कहते हैं वो क्या तुम्हें ये सब दे पाता है?

नहीं न, इसलिए तो जो व्यक्ति आपको प्रेम प्रसंग में नहीं दिखाई देगा, उसकी जिन्दगी में फिर भी थोड़ी बहुत शांति, सहजता मिल सकती है लेकिन जो प्रेमी/आशिक हो वो तुम्हें अनुत्तेजित, मौन, शांत और ध्यानस्थ दिखे ऐसा हो ही नहीं सकता!

प्रेम और अंधविश्वास

आचार्य जी आगे समझाते हैं की अन्धविश्वास सिर्फ यह नहीं है की फलाने गाँव में लुटिया देवी मर गई और उनकी आत्मा पेड़ पर लटकी है, बल्कि अन्धविश्वास हर वो चीज़ है जो तुमने समझी नहीं जानी नहीं पर मान ली!

और इस बात में कोई शक नहीं की अधिकतर प्रेमी जोड़े अन्धविश्वासी होते हैं, इसलिए आचार्य जी जोड़ते हैं तुम्हें न अपना पता है न आकर्षण का, न स्त्री परुष का, और फिर तुम्हें प्रेम का मतलब कैसे पता हो सकता है?

आचार्य जी कह रहे हैं " बहार का अन्धविश्वास मिटाने के लिए दुर्भाग्यपूर्ण विज्ञान ने बड़ी तरक्की कर ली है, लेकिन अन्दर के अंधविश्वास को हटाने के लिए तुम्हें अध्यात्मिक ग्रंथो की ओर आना ही होगा, इन्हीं को जानकार आप अपने जीवन का अवलोकन करोगे, सच्चाई मुक्ति की तरफ बढोगे इसी से आपका अन्धविश्वास छटता जायेगा"

हम जिनसे प्रेम करते हैं, वो हमसे नफरत क्यों करते हैं? Chapter 13 Summary in Hindi

अक्सर हम अपने मित्रों, रिश्तेदारों या पारिवारिक लोगों को प्रेम तो अन्दर से बहुत करते हैं पर हमें अहसास होता है की **सामने वाला प्रेम** के बदले हमें नफरत दे रहा है।

और ऐसा होने पर हमें आंतरिक रूप से बड़ी चोट लगती है, नतीजा आगे हम उससे प्रेम करना तो दूर उसका बुरा करने के बारे में सोचने लगते हैं।

अब यह भावना व्यक्ति के मन में अपने प्रेमी के लिए या फिर किसी भी व्यक्ति के लिए उठ सकती है, तो आचार्य जी ने इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा की ओर बड़े सहज और सरल तरीके से हमें गहरी स्पस्टता दी।

हम करें प्रेम, और सामने से नफरत क्यों मिले ?

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी कई बार ऐसा क्यों होता है? जिनसे हम प्रेम करते हैं बदले में वो हमें नफरत देते हैं।

आचार्य जी: आप तो अपने मन का कार्य ही कर रही हैं न, तुम्हें **किसी को प्रेम करना** था वो आप कर रही हैं? बस करते रहिये।

लेकिन दिक्कत जब होती है जब मन में ये विचार आता है की हम प्रेम के बदले कुछ लेने की भी आशा मन में रख लेते हैं।

जैसे किसी से किसी तरह का मान सम्मान या व्यवहार इत्यादि, और जब वो नहीं मिलता तो हम शिकायत करते हैं।

बहुत प्रेमीजन आते हैं कहते हैं " आचार्य जी मेरा प्रेम विफल हो गया"

और मैं चौंक जाता हूँ।

आपको भला कोई प्रेम करने से रोक सकता है क्या?

आपको जेल में डाल दिया जाये फिर भी आपके प्रेम को कोई बेडी नहीं पहना सकता, आपके शरीर को जरुर पहना सकता है।

लेकिन फिर वो कहते हैं आचार्य जी देखिये प्रेम मुझसे किया था "सुहागरात किसी और से"

तो सीधे ये कहिये ना मुझे उसका शरीर चाहिए था, अपने प्रेम के बदले!

प्रेम देने का नाम लेने का नहीं

प्रेम कोई व्यापार में सौदा थोड़ी है की एक लीटर आप दो एक लीटर मै दूंगा, प्रेम तो स्वतन्त्र होता है, जिसे करने से कोई रोक नहीं सकता।

प्रेम के बदले में न तो कुछ लिया जा सकता है और न ही प्रेम भीख में माँगा जा सकता है। प्रेम में कोई कामना (इच्छा) नहीं होती।

लेकिन हम आज तक प्रेम को यही समझते आये हैं प्रेम दो बदले में प्रेम पाओ। तो जब कोई बहुत परेशान हो प्रेमी जिसे बदले में प्रेम न मिला हो।

समझ लेना सच्चा प्रेम उसे कभी हुआ ही नहीं, उसकी कामना जुडी थी किसी व्यक्ति से और जब वह पूरी नहीं हो पाई तो अब वो आंसू बहा रहा है।

जिसके पास जो होगा वही देगा

प्रेम करना सूरमाओं का काम होता है और प्रेम दिल खोल के किया जाता है, मै कहता हूँ आप प्रेम डंके की चोट पर करिए।

प्रेम देने वाले को किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं होती, रानी हैं आप बादशाहत दिखाइये, और इसकी चिंता बिलकुल न करें की प्रेमी आपसे प्रेम करता है या नहीं...

उसके पास जो होगा वो आपको देगा जो आपके पास होगा आप दे रहे हैं।

प्यार है या कारोबार – अध्याय 14 | Full Summary in Hindi

प्यार और कारोबार दो अलग-अलग चीजें हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश प्रेम में हम भावनाओं का इस्तेमाल कर कारोबार कर लेते हैं और फिर प्रेम नहीं मिला इसकी शिकायत करते रहते हैं।

लेकिन प्यार और व्यापार दोंनों को किस तल पर रखना चाहिए? और क्या हम इन मामलों में गलती कर बैठते हैं यह समझने के लिए हमें इस अध्याय को पढना होगा! आइये जानते हैं।

आचार्य जी: व्यापार का नियम है कुछ लिया है तो लौटाना पड़ेगा, जबकि प्रेम कहता है **जो दिया है गिनो मत** बस देते रहो बिलकुल अपेक्षा मत रखना।

तो अगर तुम्हारे साथ किसी का रिश्ता कारोबारी है तो जितना आपको मिला है, उतना ही लौटा दीजिये। अन्यथा बेईमानी होगी, लेकिन हाँ अगर किसी से सच्चा प्रेम है तो फिर ये मत सोचिये कितना दिया, देते रहिये, देते रहिये.. क्योंकि प्रेम गिनता नहीं है और यही **सच्चा आत्मिक प्रेम** कहलाता है।

तो पहले रिश्ता कारोबारी है या आत्मिक इसका निर्धारण कर लीजिये।

हम प्रेम में कर देते हैं कारोबार | प्यार है या कारोबार

आचार्य जी कह रहे हैं लेकिन हम बिलकुल उल्टा कर देते हैं जिनके साथ तुम्हें लगता है **प्रेम के रिश्ते** हैं उन्हें आप व्यापार में कह देते हैं ले जाइए! अपनी ही दुकान है, और देते समय ठीक ठीक यह भी नही पूछते की कितना ले जा रहे हैं कब लौटायेंगे?

तो इस तरह कारोबार में हम भावना घुसेड देते हैं, और नतीजा खुद को घाटा और कई बार तो व्यापार ही बंद हो जाता है।

प्रेम में नुकसान हुआ

कई लोगों की ये शिकायत रहती है प्यार तो किया था हमने पर बदले में मिला नहीं। तुम ये प्यार कर रहे हो की तराजू लेकर तोल रहे हो, एक किलो मैंने दिया सिर्फ उसने आधा किलो दिया.. नहीं ऐसा मत करिये।

अरे प्रेम करने का मतलब धंधा करना होता है क्या? प्रेम तो नि:स्वार्थ होता है दुनिया की चीजें धूल-मिटटी हैं। इन्हें आसानी से नापा जा सकता है लेकिन प्रेम वस्तु नहीं है, उसका मापतोल बिलकुल नहीं किया जा सकेगा।

रिश्ते बिना प्रेम के नहीं चल सकते| अध्याय 15 Full Summary in Hindi

देखिये, जीवन है तो जाहिर सी बात है लोगों से रिश्ते तो बनेंगे ही, अब उन रिश्तों में अगर प्रेम नहीं होता तो फिर विवाद होते हैं। (रिश्ते बिना प्रेम के नहीं चल सकते chapter 15 summary)

अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी को देखने पर मिलता है, जहाँ प्रेम के रिश्ते बने होते हैं उनके बीच खटर-पटर बहुत होती है, बिना उसके उन्हें चैन नहीं आता ऐसा हमें अपने घरो में भी देखने को मिल जाता है।

पर क्या वास्तव में प्रेम के रिश्ते ऐसे ही होते हैं? **प्रेम का रिश्ता कैसा होता है**? इस लेख में आचार्य जी इस प्रश्न को गहराई के साथ समझा रहे हैं।

प्रेम में जरूरी नहीं शारीरिक रुप से साथ होना

प्रश्नकर्ता: “आचार्य जी, समझ नहीं आता पिता जी के साथ रहूँ या अलग शिफ्ट हो जाऊं”

आचार्य जी: पिता से दूरी बनाना चाहते हो तो पहले ये बताओ दोनों के बीच प्रेम की गुणवत्ता क्या है?

प्रश्नकर्ता:– ये मुझे पता नहीं है, वास्तव में उनसे दूरी बनाना चाहती नहीं बस मन में कभी ये ख्याल आता है। ऐसा नहीं की अपनी जिम्मेदारी से भागना चाहती हूँ पर सिर्फ जिम्मेदारी के लिए साथ रहना मुझे थोडा अजीब लगता है।

आचार्य जी:– देखिये ये बिलकुल आवश्यक नहीं की **प्रेम का मतलब** है तुम किसी के साथ शारीरिक रूप से रहो। और ऐसा भी नहीं है की प्रेम है तो दूर रहो। अगर रिश्ते में आपस में प्रेम है तो इससे फर्क नहीं पड़ता तुम किस जगह रहते हो।

प्रेम है तो तुम कनाडा भी शिफ्ट हो सकते हो, या फिर घर पर ही रह सकते हो, वो आपकी स्तिथि पर निर्भर करता है।

लेकिन अक्सर देखा जाता है जहाँ प्रेम नहीं होता वहां पर **शारीरिक रूप से** किसी के साथ रहना जरूरी हो जाता है। थोड़ी देर ही कोई कहीं चला जाता है तो दूसरे को असुरक्षा की भावना आने लगती है, उसे लगता है कहीं मुझे भूल न जाए।

देखा होगा परिवार में, आस पड़ोस में आपने अक्सर ऐसा जहाँ लोग एक दूसरे के न होने पर चिल्लाने लगते हैं।

लेकिन प्रेम है अगर वाकई तो पिता या कोई भी पारिवारिक सदस्य पहले आपका हित देखेंगे और जहाँ आपका इस समय रहना उचित है आपको रहने के लिए कहेंगे।

रिश्तों में प्रेम के नाम पर उपद्रवी हरकतें

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी आपका मतलब है जहाँ प्रेम नहीं है आपस में वहां साथ नहीं रहना चाहिए?

आचार्य जी: पहली बात प्रेम रिश्तों में होना बहुत बहुत जरुरी है, प्रेम नहीं होगा तो क्या करोगे साथ रहकर एक दूसरे का सर फोडोगे, फिर लोग कहते हैं जहाँ दो बर्तन होते हैं वो तो आपस में बजेंगे ही न।

इस तरह ये गृहस्थी वाले फिर बड़े स्वादिष्ट झूट निकालते हैं, बासी भोजन को गले में उतारने के लिए।

अभी अभी तो सर फोड़ा है, अब ये लो जान! बैंडेज लगा लो, कल फिर सर फोड़ना है।

तू-तू मैं-मैं, गाली- गलौज, उपद्रव करके हम सोचते हैं बिना इनके गृहस्थी जीवन सूना वीरान होता है।

प्रेम का मतलब चिपका चिपकी नहीं होता समझिये प्रेम के रिश्ते में एक दूसरे का हित देखा जाता है। प्रेम में आप उनका हित देखिये, और वो आपका हित देखेंगे। बस रिश्ते में प्रेम होना जरूरी है।

ऐसा प्रेम क्यों नहीं मिलता कहीं और?

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी ऐसा प्रेम आजकल किसी रिश्ते में देखने को भी नहीं मिलता?

आचार्य जी: आपकी अलमारी में टोपी क्यों नहीं है? वो मुझे कैसे पता ? ये आप देखिये न आपके **रिश्ते में प्रेम क्यों नहीं है**?

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी आम जीवन में परिवार वाले बोलते हैं की शादी कर लो, वो अपने हित के लिए बोलते हैं ऐसा या फिर कहीं उन्हें अपना हित भी मालूम नहीं है?

आचार्य जी: सही प्रश्न किया " आमतौर पर हम अपनी इच्छा को दूसरे के कंधे पर चढ़ाकर प्रकट करते हैं! ताकि हमारा स्वार्थ, लालच सीधे तौर पर सामने न आ पाए"

देख भाई वो तेरा पसंदीदा बल्ला था न, उसे मैंने गुप्ता जी से ऑर्डर करवा दिया है वो मेरठ से ले आयेंगे! एक ही पीस था भाई मैंने कहा ले आओ पेमेंट मिल जाएगी! उस बैट से तो तेरा बैटिंग स्टाइल और बेस्ट हो जायेगा.. तो जल्दी से पेमेंट करके ऑर्डर कर दे शाम तक मिल जायेगा।

प्रेम और मोह में ये फर्क है | अध्याय 16 Full Summary in Hindi

अपने रिश्तों को देखकर लगता है हमें जिनसे मोह है, उन्हीं से सबसे अधिक प्रेम भी होता है। आप यह बात अपने पारिवारिक सदस्यों, मित्रों या रिश्तेदारों पर लागू कर सकते हैं। (प्रेम और मोह में ये फर्क है | अध्याय 16)

पर क्या **वास्तव में प्रेम** होने के लिए मोह होना जरुरी है? ये मोह और प्रेम में क्या अंतर है? क्यों ये दोनों साथ साथ नहीं चल सकते, यदि आप समझना चाहते हैं तो आचार्य जी **प्रेम सीखना पड़ता है** नामक इस पुस्तक के 15 वें अध्याय में इस विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

प्रेम और मोह में फर्क समझिये

आचार्य जी कह रहे हैं आप एक कमरें में बंद हैं, वहां साजो-सज्जा, मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं। लेकिन कमरे की दिवार के बाहर मधुर संगीत, शीतल हवा है यानी इससे बाहर एक बेहतर जीवन खड़ा है। और अब आपका प्रेम आपको इस कमरे को अलविदा कहकर उस

सुन्दर जिन्दगी को जीने के लिए प्रेरित कर रहा है, इसके लिए चाहे आपको अपनी पुरानी सुख सुविधाओं का त्याग क्यों न करना पड़े। यही प्रेम है।

दूसरी तरफ मोह उस स्तिथि को कहा जाता है जब आपको कमरे के बाहर का जीवन तो बहुत सुहाता है लेकिन चूँकि उस कमरे में आपकी पुरानी तस्वीरें है, यादें हैं और भोग विलास, मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं जिनसे आपको लगाव हो गया है, और अब आप उसे चाहकर भी छोड़ नहीं पाते। यही मोह कहलाता है।

इसलिए जहाँ व्यक्ति को किसी वस्तु, व्यक्ति, विचार इत्यादि से मोह हो जाये तो वहां से प्रेम गायब हो जाता है। बस यही महीन सा अंतर है प्रेम और मोह में।

लेकिन कई बार लोगों को प्रेम और मोह में समानता दिखाई देती है, पर मै कह रहा हूँ! समानता तो छोडो ये दोनों विपरीत भी नहीं हैं। एक दूसरी दुनिया का है दूसरा, दूसरी दुनिया का।

प्रेम क्रांति है

मोह जहाँ पुरानी व्यवस्थाओं, धारणाओं को आगे बढाने का नाम है वहीं प्रेम विस्फोटक होता है। जो व्यक्ति के पुराने ढर्रे, पुरानी आदतों को तोड़ मोड़ देता है और उसका जीवन ही बदल देता है।

प्रेम आपको वो रहने नहीं देता जैसे आप है, ऐसा नहीं है की आप प्रेम में पुरानी व्यवस्था का पालन न करने के लिए उसका विरोध करते हैं।

बल्कि प्रेम में आप पुराना सब भूल ही जाते हैं, कोई पूछे उस प्रेमी से और कहे कहाँ थे इतने दिन और क्या हुआ जीवन में?

वो कहेगा पता नहीं,

कोई पूछेगा **“पीछे का वो सब क्यों छोड़ दिया”**

वो कहेगा “याद नहीं”

बस जीवन बदल गया, क्यों छोड़ा, कैसे हुआ? वो उन पुरानी बातों को इतनी भी तवज्जों नहीं देता, जो याद रखी जा सके।

तो देखिये फिर इसलिए जो **सच्चे प्रमी** होते हैं वो डरते बिलकुल नहीं! क्योंकि डर हो इसके लिए कुछ पुराना याद तो होना चाहिए न, लेकिन प्रेमी भुलक्कड होते हैं वो पुराना सब भूल जाते हैं बस उनका उसी पर ध्यान होता है जिससे उन्हें प्रेम है।

प्रेम और मोह में कोई समानता नहीं होती

आचार्य जी कह रहे हैं आपको प्रेम और मोह में समानता या असमानता दिख कैसे गई? मोह तो बड़ा कमजोर होता है उसका तुम नाम भी नहीं ले सकते।

किसी के प्रति आकर्षित हो गए हो और उससे कुछ पाना चाहते हो सीधा ये नहीं कहोगे की मैं तुम पर मोहित हो गया हूँ, नहीं।

उसके लिए मोह को प्रेम का सहारा लेना पड़ता है सुना है न, मै तुमसे प्यार करता हूँ।

हम किसी भी चीज़ में **प्रेम का नाम** घुसेड देते हैं i am loving it, i love pizza, i love the way you walk इत्यादि।

देख रहे हो खाना-पीना रहना,हर चीज़ में हम प्रेम को घुसेड देते हैं जैसे किसी सब्जी में आलू को..

तो जो इतना बलहीन है जिसको बचाए, छुपाये रखना पड़ता है उसकी तुलना प्रेम से कैसे की जा सकती है?

नामकरण बताता है हम किस तरह के लोग हैं

हमारी संस्कृति में अध्यात्म गायब होने की वजह से **समझदारी और बोध** जीवन से कैसे गायब हुआ है, आप बच्चों के नामकरणों से समझ सकते हैं।

कुछ दशक पहले तक लड़कों के नाम रखे जाते थे थानेदार सिंह, मैनेजर चौबे। देख पा रहे हो लोग पद, प्रतिष्ठा और ताकत के इतने प्यासे हैं की लड़का थानेदार बने इसके लिए पैदा होते ही उसका नाम रख दिया क्या थानेदार सिंह।

दूध और मीठे से ज्यादा आसक्ति हई तो नाम रख दिया लड़की का राबड़ी मलाई, और अगर हमारी संस्कृति अध्यात्म पर होती तो माँ बाप अपनी बच्ची का नाम माया, कामिनी, ममता नहीं रख सकते थे। लेकिन हमें तो ममता बड़ा सुन्दर नाम लगता है वहां कृष्ण भगवदगीता में अर्जुन से ममता से बचने की बात कह रहे हैं और यहाँ ममता नाम बहुत प्रचलित और शुभ लगता है हमें।

तो इसी तरह अगर आध्यत्मिकता चूँकि हमारे जीवन में होती तो कभी मोह को इतना सम्मान, महत्व नहीं मिलता हमारी संस्कृति में और हम इस शब्द से किनारा रखते।

क्या ख़ास लोगों से ख़ास प्रेम होता है? Chapter 17 Summary in Hindi

हमारी जिन्दगी में कुछ लोग बेहद खास होते हैं, कई बार हम उनकी मदद भी करना चाहते हैं दिल से, परन्तु बदले में आभार व्यक्त करने की बजाय **हमें उनसे नफरत** मिलती है।

इसलिए इस अध्याय में प्रश्नकर्ता आचार्य जी से इस विषय पर बातचीत करते हैं, जिसमें हमें पता चलता है की आखिर मदद हमें कब और किस उद्देश्य से करनी चाहए! ताकि हमें दूसरों से निराशा न मिल सके।

स्वस्थ्य सम्बन्ध बेहद जरूरी हैं जीवन में

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी पिछले कुछ समय से मैं अपने जीवन में किसी रिश्ते को विशेष महत्व नहीं दे पाती, जिससे मुझे लगता है हमारे रिश्ते बिगड़ने लगे हैं।

आचार्य जी:- तीन बातें हैं **पहली अपने रिश्ते में** किसी को ख़ास न बनाइए, ऐसा करके आप दूसरे का ही नुकसान कर देते हैं।

दूसरा आपकी जिन्दगी में जो नए लोग आये हैं उनसे आपका रिश्ता कैसा बना है? आप उन पांच ख़ास प्रेमी जनों को छोडिये जो 45 नए लोग आपकी जिन्दगी में आये हैं उनकी बात कर रहा हूँ! क्या उन्हें भी आपसे शिकायत रहती है या वो आभार व्यक्त करते हैं?

तीसरा अब जब आप किसी को विशेष महत्व ही नहीं देते, तो उन लोगों से रिश्ता खराब होने से इतना फर्क क्यों पड़ रहा है।

मदद करें, बिना आशा के

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी, कई बार हमारा प्रिय व्यक्ति किसी बीमारी से ग्रस्त हैं हम उसका इलाज करवाना चाहते हैं, पर वो कहता है मै ठीक हूँ तुम जाओ, तो ऐसे में कभी उसकी मदद ही न करने का मन करता है।

आचार्य जी: ठीक है, तो इसमें क्या दिक्कत हुई ? आपके अंहकार को चोट पहुंची आपका अपमान हुआ यही न?

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी अतीत में कुछ लोगों से मेरा **गहरा प्रेम था** बस इसलिए पूछा..

आचार्य जी: अब तो सभी लोग बराबर होंगे न, तो अब किसी की मदद करने पर उनसे मिली हुई पीड़ा से आपको इतना फर्क नहीं पड़ना चाहिए।

आप वाकई उनका भला करना चाहती हैं तो बस इस बात पर ध्यान लगाइए की कैसे उनकी मदद की जा सकती है, उनसे मिली निराशा या गले सिकवों से नहीं।

अगर एक सड़क दुर्घटना में कुत्ता घायल हो जाता है, और आप उसके घाव में मरहम लगाना चाहते हैं तो देखा है कैसे वो तुम्हें ही काटने आता है, लेकिन उसकी परवाह किये बगैर उसके मुंह को बाधकर उसको दवा पट्टी करानी होती है।

भला करने के लिए ये सोचा नहीं जाता की कहीं सामने वाला व्यक्ति मुझसे बुरा बर्ताव तो नहीं करेगा। देखिये, मदद करने के लिए बहुत बड़ा दिल चाहिए, वे लोग बिलकुल मदद नहीं कर सकते जो किसी की मदद करने के बदले धन्यवाद चाहते हैं, नहीं बिलकुल नहीं।

सहायता का आभार व्यक्त करने में लगता है समय

सड़क पर घायल कुत्ता जो अपने इलाज के दौरान आपको काटने ही आ रहा था, एक समय बाद जब वह ठीक हो जाता है तो फिर आपके ही आगे पीछे पूँछ फहराता है, लोटता है, निहारता है लेकिन ये सब तुरंत नहीं हो जाता इसके लिए समय लगता है।

इसी तरह इंसान की मदद होती है तो कई बार उस व्यक्ति को मदद का अहसास होने में उम्र बीत जाती है, और फिर वो इन्सान आपका आभार व्यक्त करता है, इसलिए बिना परवाह किये की **प्रेम से की गई मदद** के बदले क्या मिलेगा? छोड़ दीजिये।

इसलिए तो कबीर साहब कहते हैं, यह संसार काली कुतिया है इसको छेड़ने पर काटने लगती है, कहीं पर कबीर ये भी कहते हैं की झूठे के पीछे सभी चले और सच्चे इन्सान को दुनिया मारने चलती है, तो इसका मतलब यह नहीं की सच्चा भी झूठा हो जाता है, नहीं सच्चे लोग अपना काम करते हैं धन्यवाद मिले तो भी ठीक न मिले तो भी।

आचार्य जी कह रहे हैं इसी में प्यार की आबरू वो जफा करें मैं वफा करूं! अंत में आचार्य जी इसी समबन्ध में ओशो के जीवन में घटित एक महत्वपूर्ण घटना का वर्णन करते हैं जिसे जानकार लोगों को समझ में आता है की प्रेम में कोई बेवफाई करे तो भी उसका सिला वफ़ा से दिया जाता है।

प्रेम बिना जीवन कैसा | Chapter 18 Summary in Hindi

जीवन में प्रेम होना बेहद जरूरी है? हमें लगातार यह बताया और सुनाया जाता है? पर किसी एक जिज्ञासु प्रश्नकर्ता के मन में सवाल आया की **क्या बिना प्रेम के भी जीवन जिया** जा सकता है।

क्या बिना प्रेम के हम एक अच्छी जिन्दगी जी सकते हैं? जवाब में आचार्य जी विस्तार से बतलाते हैं की आखिर एक प्रेम युक्त जीवन और प्रेम हीन जीवन में क्या अंतर होता है?

हमें आशा है यह जानने के बाद आप जरुर यह निर्णय ले पायेंगे की जीवन में प्रेम की महत्वता कितनी है? और आपको **जीवन में किसी से प्रेम** होना चाहिए या नहीं।

बिना प्रेम के जीवन कैसा होता है?

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी एक प्रेममय जीवन कैसे जिया जा सकता है? बिना प्रेम के जिन्दगी कैसी होती है?

आचार्य जी: कभी देखा है पेड़ से जब पत्ता अलग हो जाये तो वह सूखा पत्ता हवाओं के झोकों पर किसी भी दिशा में चल पड़ता है, वैसे ही एक इंसान की भी स्तिथि होती है जीवन में प्रेम न होने पर।

ठीक ऐसे ही बिना प्रेम का जीवन एक शराबी की भांति होता है जिसके पैर उसी दिशा में लडखड़ाकर बढ़ रहे हैं जिधर उसका मन उसे ले जाता है।

दूसरी तरफ जिसके जीवन में प्रेम होता है वह प्रेमी बखूबी जानता है की उसकी अंतिम चाह किसकी है? कौन सी चीज़ है जो उसे जीवन में पानी है? बस उस एकलौती इच्छा के खातिर वह जीवन जीता है।

लेकीन प्रेम न हो जीवन में तो क्योकी तुम्हारे पास कोई एक नहीं है जिसकी तरफ तुम्हें जाना है तो फिर आप इस संसार के हो जाते हैं जो जहाँ ले जाता है वहीँ चल देते हैं।

क्योंकि प्रेमहीन व्यक्ति का मन केंद्र से संचालित नहीं होता फिर वो जीवन में अपनी स्तिथि और हालातों के हिसाब से फैसले बदलते रहते हैं, अतः इन्सान कभी किसी व्यक्ति की तो कभी किसी वस्तु की तलाश में रह जाता है, और इस तरह वह हर किसी का होकर रह जाता है।

प्रेम हीन जीवन में शादी का चुनाव

आचार्य जी समझाते हैं एक नौजवान युवक जिसकी शादी का समय है उसके जीवन में जब प्रेम नहीं होता तो स्तिथि कुछ ऐसी होती है।

माँ उसके सामने 8-10 लड़कियों के फोटो रख देती है, अब उसे समझ नहीं आता किसको चुनुं तो कभी वो एक पर ऊँगली रखता है तो एक घंटे बाद सोचता है नहीं नहीं उससे बेहतर ये दूसरी वाली है।

फिर थोड़ी देर में उसकी बड़ी बहन आती है और कहती है तेरे लिए ये वाली बेस्ट है, वो भी हाँ हाँ कहकर उससे शादी करने का चुनाव कर लेता है।

तो ये होती है एक प्रेमहीन व्यक्ति के जीवन की कहानी,उसके निर्णय, उसकी इच्छाएं उसकी अपनी नहीं होती। लेकिन उसे लगता है ये मेरी पत्नी है, बच्चे हैं , गृहस्थी इत्यादि ..लेकीन उसे ये अहसास ही नहीं है जीवन की हवा जिस ओर चलती है उसे उसी तरफ ले जाती है।

वो अनजान है जरा सा हवा का झोंका आता है, वह उसे दूसरी तरफ बहा ले जाता है! और जिन्दगी कुछ और हो जाती है. और नादान लोग फिर भी उसे अपना कहते हैं।

बिना प्रेम के जीवन में टीवी और चैनल

आचार्य जी कहते हैं की प्रेम न हो जीवन में तो फिर जो भी चीज़ तुम्हें **जिन्दगी में आकर्षित करती है** तुम उसकी तरफ बढ़ जाते हो, जैसे घर में खाली बैठे बैठे उब गए थे तो चल दिए मॉल की तरफ वहां दायें बाएं विंडो में कुछ चीजें पसंद आई और 50 हजार की बेमतलब शोपिंग कर आये, मुबारक हो *क्रेडिट कार्ड*! ये है प्रेमहीन जीवन।

एक इन्सान आधी नींद में सोफे पर टीवी के सामने लेटा हुआ हो, अर्धनींद की इसी अवस्था में वो चैनल बदले जा रहा है ताकि कुछ तो मन को बहलाने के लिए मिल जाये, और फिर ऐसा करते करते उसे नींद आ गई, सामने टीवी पर 6 घंटे से एक चैनल चला जा रहा है..

और जब आँखे खुलती हैं तो वह कहने लगता है ये ही तो मेरा पसंदीदा चैनल है पूरे 6 घंटे देखा है, और फिर इसी को कहता है ये मेरा चुनाव था, मेरी इच्छा थी इस चैनल को देखना।

आचार्य जी कहते हैं यही है प्रेम हीन जीवन जो कभी जमाने के थपेड़ों पर, कभी समाज के संस्कारो पर और कभी शरीर की वृत्तियों पर चलता है।

प्रेम नहीं तो फिर तुम किसी के नहीं

इस तरह इस अध्याय में आचार्य जी समझाते हैं की बिना प्रेम के जीवन में किसी का गुलाम होना सरल हो जाता है, फिर तुम्हें कोई भी यूँ ही जैसे चाहे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर लेता है।

जो भी चीजें तुम्हें लुभाती है तुम उसकी तरफ बढ़ जाते हो, सैलरी के लिए एक जॉब को छोड़कर तुरंत दूसरी जॉब पकड लेना हो चाहे किसी खूबसूरत लड़की को देखकर उस पर लट्टू हो जाना हो, या फिर किसी वस्तु को भोगने के लिए उसे पाना हो ये सब प्रेम हीन जीवन के लक्षण हैं और बड़े भयंकर हैं।

बिना प्रेम का जीवन वेश्यावृति ही है, जिसमें तुम हर किसी के हो जाते हो।

इस अध्याय में आचार्य जी ने कई और उदाहरणों के जरिये हमें इस विषय को समझाया है जिसे पढने में आपको आनदं तो आएगा ही साथ ही सच्चाई भी पता चलेगी।

प्रेम में अशांति Chapter 19| Prem Sikhna Padta hai Full Summary in Hindi

जब एक जोड़े के बीच **प्रेम-प्रसंग** की शुरुवात होती है या उनके बीच का यह रिश्ता काफी पुराना हो जाता हैं तो फिर भी उनके बीच आपसी नोंक झोंक बनी रहती है। कई बार तो वाद-विवाद की घटनाओं को वो सामान्य मानने लगते हैं और उन्हें प्रेम में अशांति की आदत सी हो जाती है।

अतः इसी को लेकर एक प्रश्नकर्ता ने आचार्य जी से सवाल पूछा है, वे लोग जो किसी से भी **जीवन में प्रेम** करते है परन्तु उनके जीवन से शांति गायब हो गई है, उन्हें यह अध्याय अंत तक जरुर पढना चाहिए।

प्रेम में अशांति की मुख्य वजह

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी **जिससे मुझे प्रेम** है, उसका मन विचलित बेचैन रहता है, और उसकी इसी अशांति की वजह से कई बार मैं भी परेशान हो जाती हूँ।

आचार्य जी: अपने प्रेम से स्वार्थ कम कर दीजिये, क्योंकि प्रेम में जैसे ही स्वार्थता आती है फिर वो प्रेम नहीं रह पाता वो बस भोगने का माध्यम बन जाता है! प्रेम में ये नहीं देखा जाता मुझे कितना कम मिला? तुझे कितना मिला?

अगली बार जब साथ बैठो और आपस में कोई विवाद हो तो पूछियेगा खुद से की " ये सब कुछ मैं कहीं कुछ पाने के लिए तो नहीं कर रही हूँ"

क्योंकि प्रेम में हो आप तो यही सबसे बड़ी चीज़ है, आपका प्रेम ही सब दवाइयों का इलाज है! प्रेम है वाकई किसी से तो अपनी इच्छाएं, कामनाएं जरा साइड में रखकर दूसरे को आगे रखिये, क्यूंकि जब प्रेम होता है किसी व्यक्ति से तो वह आपके जीवन में विशेष स्थान लेने के काबिल होता है।

जब कोई आपके प्रेम को न समझे

प्रश्नकर्ता: अपनी तरफ से सब कुछ करने के बाद भी सामने वाले को फर्क नहीं पड़ता ऐसा क्यों?

आचार्य जी: तो इसका मतलब है जिसे आप ऊँचा स्थान दे रही है अपने जीवन में वो इस **काबिल है ही नहीं**, क्योंकि तुम किसी के लिए खुद को पीछे रख रहे हो और सामने वाले को इस बात का बड़प्पन ही नहीं है तो फिर बात बनेगी नहीं न।

याद रखो भक्त को भगवान को पाने के लिए खुद को छोटा और छोटा करना होता है और भगवान को और बड़ा होना होता है।

इस बीच प्रश्नकर्ता पूछती हैं आचार्य जी **इन सब में गुरु का स्थान कहाँ पर है?**

आचार्य जी कहते हैं गुरु का तो काम हो गया, उसने भक्त को भगवान से मिला दिया बस वो दूर बैठा हंस रहा है, यह कहते हुए की चलो एक का और कल्याण हो गया।

जीवन में सही रास्ते पर कैसे चलें ?

प्रश्नकर्ता: आचार्य जी हम अपने सही या गलत का चुनाव कैसे कर सकते हैं?

आचार्य जी: अभी आपको जितना पता है आप उस पर चलिए, क्योंकि अगर आप इस बात का इन्तेजार करते रहे की कभी मुझे विशुद्ध सत्य प्राप्त होगा तभी मैं जीवन में उचित कार्य करूँगा! तो फिर ऐसा नहीं होने वाला।

एक व्यक्ति का उदाहरण देते हुए आचार्य जी कहते हैं की जरूरी नहीं आपको अष्टावक्र गीता के 20 के बीसों अध्याय समझ आये, आपको अगर 5 ही श्लोक समझ आ रहे हैं तो आप उनका ही स्मरण कीजिये! और आगे बढिए।

परन्तु जीवन में हम अधिकांश गलतियाँ इसलिए नहीं करते क्योंकि हमें बोध नहीं होता बल्कि हम जानते बूझते हुए की अभी क्या करना उचित है फिर भी नहीं करते! तो गलती से किसी गड्ढे में गिर गए तो मान लेंगे चलो देखा नहीं पर जब आखों देखी मक्खी निगल जाते हो तब..

परिवार में प्रेम क्यों नहीं? Chapter 20 | Full Summary in Hindi

एक छत के नीचे दशकों तक जिनके साथ मनुष्य रहता है, कई बार उन पारिवारिक लोगों के बीच भी **सच्चा प्रेम** नहीं पनप पाता। (परिवार में प्रेम क्यों नहीं Chapter 20 Summary in Hindi)

परिणामस्वरुप एक दूसरे से उनकी शिकायतें, गले सिकवे बने ही रहते हैं! इसी बात को गहराई से समझते हुए प्रश्नकर्ता ने आचार्य जी से इसी विषय पर मन की बात रखी आइये इस पूरी बातचीत को **प्रेम सीखना पड़ता है** नामक इस पुस्तक के 19वें अध्याय में पढ़ते हैं।

परिवार में अध्यात्मिक माहौल न होना

प्रश्नकर्ता: हाल ही में परिवार में एक अतिप्रिय व्यक्ति को मैंने खोया है! उनके जाने के बाद अहसास हो रहा है की एक साथ रहने के बावजूद वो प्रेम और निकटता घर के सदस्यों के बीच नहीं आ पाती। **प्रेम से हमारे वंचित** रहने का क्या कारण हो सकता है?

आचार्य जी: देखिये ये तो निश्चित है की परिवार तो रहेंगे ही जब तक मनुष्य में देह भाव है! और फिर देह भाव के कारण ही मन में एक दूसरे के साथ अलग रहने का भाव भी रहेगा।

आप देखिये जब भीड़ में दो नौजवान जोड़े आपस में मिलते हैं, और उनके बीच बातचीत बनने लगती है तो आप पाएंगे वो सबसे पहले दूर कोई ऐसा कोना खोजेंगे जहाँ जाकर उन्हें लोगों से परेशानी न हो।

और फिर यही कोना एक परिवार बन जाता है, जिसमें चार दिवारी होती है जो यह संकेत देती है की हम इस संसार से जुदा हैं और कोई भी हमारे बीच नहीं आ सकता।

आचार्य जी स्पष्ट कहते हैं की इस तरह का प्रेम झूठा है जिसमें आपके बीच **प्रेम का रिश्ता** तभी कायम हो सकता है, जब आप पूरी दुनिया से कट जाए।

खैर, इस तरह हमारे परिवारों की नींव तयारी होती है जिसमें जिन्दगी जब तक तुम्हें कष्ट नहीं देती तब तक खूब मौज लेने का, हुल्लड़बाजी करने का आपको बेपनाह मौका भी मिलता है।

दो हैं गुरु एक जिन्दगी दूजा गुरु

इसलिए इस बीच हम ये भूल ही जाते हैं प्रकृति यानी जिन्दगी में कोई करुणा नहीं होती, आचार्य जी समझाते हैं जीवन में 2 तरह के गुरु हो सकते हैं एक चेतना और दूसरा प्रक्रति।

एक गुरु हो सकता है एक इंसान आपका कोई मित्र जो आपकी चेतना को उठाये, तुम्हें समय रहते होश में लाये और तुम्हें जिन्दगी के थपेड़ों के प्रति सावधान करें।

दूसरा गुरु होती है प्रकृति जिसमें इन्सान की भाँती कोई करुणा नहीं होती जो सीधा सभी कर्मों का फल भुगतने के लिए विवश करती है।

एक गुरु जो तुम्हारा दोस्त है या कोई इंसान है वो तो तुम्हें दंड भी देगा तो इतना नहीं की तुम मर ही जाओ, या पूरी तरह टूट जाओ।

लेकिन प्रकृति के पास कोई दया भाव शेष नहीं होता, वो जब हिसाब करने पर आती है तो सीधा तबाही मचाती है, उसके पास कोई रियायत नहीं होती किसी को छोड़ने की, उसको मतलब ही नहीं तुम जीवन से सीखते हो या इसका दुरूपयोग करते हो।

प्रकृति को व्यक्ति विशेष से कोई मतलब ही नहीं, वो सिर्फ दल देखती है एक मादा खरगोश अगर आठ बच्चे पैदा कर रही है तो प्रकृति जानती है दो – तीन तो बचेंगे ही! अब वो कौन से होंगे वो पता नहीं, तो तुम प्रकृति की नजर में क्या हो? उसे कोई फर्क नहीं पड़ता वो अपना काम करती है।

जब हर तरफ मौज तो धर्म की क्या जरूरत?

आचार्य जी कहते हैं जैसे आपने कहा परिवार में कोई दिवंगत हो गए, तो चूँकि अब वो वापस तो आयेंगे नहीं अब श्रेष्ट यही है की इस घटना से सीखा जाये, लेकिन सीखने में फिर बाधा आती है क्योंकि परिवारों में आध्यात्मिक माहौल तो होता नहीं।

हर क्षेत्र में विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है की आज हर भौतिक समस्या का समाधान इंसान के पास है, और घर में भरपूर पैसा है तो ऐसे में लाजमी है सुख सुविधा, भोग विलास के सब साधन भी होंगे! जिनमें इंसान डूबा रहता है,मजे मारता है।

अब जब उसे जीवन में बेहोशी, मजे और अपनी समस्याओं के समाधान सीधे तौर पर मिल ही रहे हैं तो फिर उसे लगता है भला, धर्म की जरूरत क्या है? उसके बिना भी काम तो मजे में चल रहा है!

बाहरी मौज के दो नुकसान

फिर इसलिए इंसान अपने जीवन को मस्त बतलाने लगता है क्योंकि सब कुछ उसे बाहर-बाहर से बढ़िया नजर आने लगता है, लेकिन आंतरिक रूप से ख़ुशी जीवन से गायब रहती है, और इस बाहरी ख़ुशी के दो बड़े नुकसान हैं जिससे वहा अनजान रहता है!

पहला इस ख़ुशी पर कभी भी गाज गिर सकती है, कोई भी प्राकृतिक आपदा आती है जैसे अभी कोरोना वायरस आया, तो न जाने कब इन खुशियों पर विघ्न बाधा पड़ जाये!

दूसरा बाहर से सभी आपको खुश होते चेहरे दिखेंगे लेकिन उनके मानस पटल को जरा भी आप गहराई से जांचेंगे तो पता चलेंगे तो अन्दर असीमित दुःख, मानसिक विकार हैं।

लेकिन सोशल मीडिया और हर जगह आपको मुस्कुराता चेहरा मिल जाता है क्योंकि आंतरिक रूप से खुश न होने के कारण दिखावटीपन जरूरी हो जाता है!

तो जितना सम्भव हो सके परिवार में अध्यात्मिक माहौल बनाकर रखिये, क्योंकि परिवार हैं और रहेंगे ही यही इसका मूल समाधान है!